त्रयोदश तरङ्ग

कमलात्मिका (लक्ष्मी) तन्त्र

तत्रादौ पटल

अथ वक्ष्ये श्रियो मन्त्रान् श्रीसौभाग्यफलप्रदान्। यस्याः कटाक्षमात्रेण त्रैलोक्यमतिवर्तते।।१।।

जिस लक्ष्मी के कटाक्ष मात्र से तीनों लोकों पर विजय प्राप्त हो जाती है उन्हीं सौभाग्यफलप्रदायक लक्ष्मी के मन्त्रों को मैं कहूंगा।

अथ लक्ष्म्या एकाक्षरबीजमन्त्रप्रयोगः।

लक्ष्मी के एकाक्षर बीजमन्त्र का प्रयोगः

शारदा तिलक में मन्त्र इस प्रकार है :

(श्रीं) इत्येकाक्षरबीजमन्त्रः।

'श्री' यह एकाक्षर बीजमन्त्र है।

अस्य विधानम्

विनियोग : अस्य मन्त्रस्य भृगुर्ऋषिः। निवृच्छन्दः। श्रीलक्ष्मीर्देवता। मम धनाप्तये जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : भृगुऋषयै नमः शिरसि १। निवृच्छन्दसे नमः मुखे २। श्रीलक्ष्मीदेवतायै नमः हृदि ३। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ४। इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास : ॐ श्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः १। ॐ श्रीं तर्जनीभ्यां नमः २। ॐ श्रूं मध्यमाभ्यां नमः ३। ॐ श्रैं अनामिकाभ्यां नमः ४। ॐ श्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। ॐ श्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६। इति करन्यास।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ श्रां हृदयाय नमः १। ॐ श्रीं शिरसे स्वाहा २। ॐ श्रूं शिखायै वषट् ३। ॐ श्रैं कवचाय हुम् ४। ॐ श्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् ५। ॐ श्रः अस्त्राय फट् ६। इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।

इस प्रकार न्यास विधि करके ध्यान करें :

अथ ध्यानम्।

ॐकान्त्याकाञ्चनसन्निभां हिमगिरिप्रख्यैश्चतुर्भिर्गजैर्हस्तोत्क्षिप्तहिरण्मयामृतघटै-रासिच्यमानाश्रियम्। बिभ्राणां वरमब्जयुग्मभयं हस्तैः किरीटोज्ज्वलां क्षौमाबद्ध-नितम्बबिम्बलसितां वन्देऽविन्दस्थिताम्।।१।।

एवं ध्यात्वा सर्वतोभद्रमण्डले मण्डूकादिपरतत्वान्त पीठदेवताः संस्थाप्य ॐमं मण्डूकादिपरतत्त्वान्तपीठदेवताभ्यो नमः। इति पीठदेवताः सम्पूज्य। ततः पूर्वाद्यष्टसु दिक्षु नवपीठशक्तीः पूजयेत्।

कमलात्मिका (लक्ष्मी) ध्यान

कान्त्या काञ्चनसन्निभां हिमगिरिप्रख्यैश्चतुर्भिर्गजै-
र्हस्तोत्क्षिप्तहिरण्यामृतघटैरासिच्यमानां श्रियम्।।
बिभ्राणां वरमब्जयुग्ममभयं हस्तैः किरीटोज्वलां
क्षौमाबद्धनितम्बबिम्बललितां वन्देऽरविन्दस्थिताम्।।

पृ० ५७२

इस प्रकार ध्यान करके सर्वतोभद्र मण्डल में मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठदेवताओं को स्थापित करके "ॐ मं मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठदेवताभ्यो नमः" इससे पीठदेवताओं की पूजा करके पूर्व आदि आठ दिशाओं में इस प्रकार नव पीठशक्तियों की पूजा करें :

ॐ विभूत्यै नमः १। ॐ उन्मन्यै नमः २। ॐ कान्त्यै नमः ३। ॐ सुष्ट्यै नमः ४। ॐ कीर्त्यै नमः ५। ॐ सन्नत्यै नमः ६। ॐ पुष्ट्यै नमः ७। ॐ उत्कृष्ट्यै नमः ८। पीठमध्ये। ॐ ऋद्ध्यै नमः ६।

इति पीठशक्तीः सम्पूजयेत्। ततः स्वर्णादिनिर्मितं यन्त्रमग्न्युत्तारणपूर्वकं श्रीं कमलासनाय नमः। इति मन्त्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य आवाहनादिपुष्पान्तैरुपचारैः सम्पूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात्।

इन मन्त्रों से पीठ शक्तियों की पूजा करें। इसके बाद स्वर्णादि से निर्मित यन्त्र में अग्न्युत्तारणपूर्वक "श्रीं कमलासनाय नमः" इस मन्त्र से पुष्पाद्यासन देकर पीठ के मध्य संस्थापित करके उसमें प्राण–प्रतिष्ठा करके मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके आवाहन आदि से पुष्पाञ्जलि दानपर्यन्त उपचारों से पूजा करके देवी की आज्ञा लेकर इस प्रकार आवरण पूजा करें (लक्ष्मी का एकाक्षर बीजमन्त्र पूजन यन्त्र देखिये चित्र २५)।

षट्कोणकेसरेषु। अग्निकोणे। ॐ हृदयाय नमः[1] १। नैर्ऋत्ये। ॐ श्रीं शिरसे स्वाहा[2] २। वायव्यै।ॐ श्रूँ शिखायै वषट्[3] ३। ईशान्ये। ॐ श्रैं कवचाय[4] हुम् ४।पूज्यपूजकयोर्मध्ये। ॐ श्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्[5] ५। देवीपश्चिमे। ॐ श्रः अस्त्राय फट्[6] ६।

इति षडङ्गानि पूजयेत्। ततः पुष्पाञ्जलिमादाय मूलमुच्चार्य ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमा वरणार्चनम्।।१।। इति पठित्वा पुष्पाञ्जलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः सन्तु इति वदेत्। इति प्रथमावरणम्।।१।।

इससे षडङ्गों की पूजा करें। इसके बाद पुष्पाञ्जलि लेकर मूल का उच्चारण करके "ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्।" इसे पढ़ कर पुष्पाञ्जलि देकर "पूजितास्तर्पिताः सन्तु।" यह कहें। इति प्रथमावरण।।१।।

पूज्यपूजकयोरन्तरालं प्राची। तदनुसारेणान्या दिशः प्रकल्प्य प्राच्यादिचतुर्दिक्षु विदिक्षु च।

पूज्य और पूजक के अन्तराल में प्राची दिशा होनी चाहिये। तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पनाा करके प्राच्यादि चारो दिशाओं और उपदिशाओं में :

पूर्वे। ॐ वासुदेवाय नमः[7] वासुदेवश्रीपादुका पूजयामि तर्पयामि नमः १। इति सर्वत्र। दक्षिणे। ॐ संकर्षणाय नमः[8] संकर्षणश्रीपा० २। पश्चिमे। ॐ प्रद्युम्नाय नमः[9] प्रद्युम्नश्रीपा० ३। उत्तरे। ॐ अनिरुद्धाय नमः[10] अनिरुद्धश्रीपा० ४। अग्निकोणे। ॐ दमकाय नमः[11] दमकश्रीपा० ५। निर्ऋतिकोणे। ॐ सलिलाय नमः[12] सलिलश्रीपा० ६। वायव्ये। ॐ गुग्गुलाय नमः[13] गुग्गुलश्रीपा० ७। ईशान्ये ॐ कुरुंटकाय नमः[14] कुरुंटकश्रीपा० ८। देव्या दक्षिणे। ॐ शङ्खनिधये नमः[15] शंख–निधिश्रीपा० ६। ॐ वसुधायै नमः[16] वसुधाश्रीपा० १०। वामे। ॐ पद्मनिधये[17] नमः पद्मनिधिश्रीपा० ११। ॐ वसुमत्यै नमः[18] वसुमतिश्रीपा० १२।

इति द्वादशदैवतानि पूजयित्वा पुष्पाञ्जलिं दद्यात्। इति द्वितीयावरणम्।।२।।

इससे बारह देवताओं की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवें। इति द्वितीयावरण।।२।।

इसके बाद पत्राग्रों में पूर्वादि क्रम से :

ॐ बलाक्यै नमः[१९] बलाकीश्रीपा० १। ॐ विमलायै नमः[२०] विमलाश्रीपा० २। ॐ कमलायै नमः[२१] कमलाश्रीपा० ३। ॐ वनमालिकायै नमः[२२] वनमालिका श्रीपा० ४।ॐ विभीषिकायै नमः[२३] ॐ विभीषिकाश्रीपा० ५। ॐ मालिकायै नमः[२४] मालिकाश्रीपा० ६। ॐ शाङ्कर्यै नमः[२५] शाङ्करीश्रीपा० ७। ॐ वसुमालिकायै नमः[२६] वसुमालिकाश्रीपा० ८।

इससे पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवें। इति तृतीयावरण।।३।।

इसके बाद भूपुर के भीतर पूर्वादि क्रम से :

ॐ लृ इन्द्राय नमः[२७] १। ॐ रं अग्नये नमः[२८]। ॐ मं यमाय नमः[२९] ३। ॐ क्षं निर्ऋतये नमः[३०] ४। ॐ वं वरुणाय नमः[३१] ५। ॐ यं वायवे नमः[३२] ६। ॐ कुं कुबेराय नमः[३३] ७। ॐ हं ईशानाय नमः[३४] ८। ईशानपूर्वयोर्मध्ये। ॐ आं ब्रह्मणे नमः[३५] ६। निर्ऋतिपश्चिमयोर्मध्ये। ॐ ह्रीं अनन्ताय नमः[३६] १०।

इससे दश दिक्पालों की पूजा करें। तदुपरान्त उसके बारह :

ॐ वं वज्राय नमः[३७] १। ॐ शंशक्तये नमः २[३८]। ॐ दं दण्डाय नमः[३९] ३। ॐ खं खड्गाय नमः[४०] ४। ॐ पां पाशाय नमः[४१] ५। ॐ अं अकुशाय नमः[४२] ६। ॐ गं गदायै नमः[४३] ७। ॐ त्रिं त्रिशूलाय नमः[४४] ८। ॐ पं पद्माय नमः[४५] ६। ॐ चं चक्राय नमः[४६] १०।

इत्यस्त्राणि पूजयेत। इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनीराजनान्तंसम्पूज्य जपं कुर्यात्। अस्य पुरश्चरणं द्वादशलक्ष जपः। द्वादशसहस्रकमलंपुष्पहोमः। तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि च कुर्यात्। एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति। एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत्। तथाच : भानुलक्षं जपेन्मन्त्रं दीक्षितो विजितेन्द्रियः। तत्सहस्रं प्रजुहुयात्कमलैर्मधुरोक्षितैः।।१।। जपान्ते जुहुयान्मन्त्री तिलैर्वा मधुराप्लुतैः। बैल्वैः फलैर्वा जुहुयात्त्रिभिर्वा साधकोत्तमः।।२।। इत्थं यो भजते देवीं विधिना साधकोत्तमः। धनधान्यसमृद्धिः स्याच्छियमाप्नोत्यनिन्दिताम्।।३।। वक्षःप्रमाणे सलिले स्थित्वा मन्त्रमिमं जपेत्। त्रिलक्षं प्रजपेन्मन्त्रं वांछितं लभते धनम्।।४।। अशोकवह्नौ जुहुयात्तण्डुलैराज्यलोलितैः। वशयत्यचिरादेव त्रैलोक्यमपि मन्त्रवित्।।५।। जुहुयात्तण्डुलैः शुद्धैरर्काग्नौ नियुतं वशी। राज्यश्रियमवाप्नोति राजपुत्रो महीयसीम्।।६।। जुहुयात्खादिरे वह्नौ तण्डुलैर्मधुरोक्षितैः। राजा वश्यो भवेच्छीघ्रं महालक्ष्मीश्च वर्द्धते।।७।।

इससे अस्त्रों की पूजा करें। इस प्रकार आवरण पूजा करके धूपदान से लेकर नीराजन पर्यन्त पूजा करके जप करें। इसका पुरश्चरण बारह लाख जप है। द्वादशसहस्र कमल पुष्पों से होम करें और तत्तद्दशांश से तर्पण, मार्जन तथा ब्राह्मण भोजन करें। ऐसा करने पर मन्त्र सिद्ध होता है। इस मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर साधक प्रयोगों को सिद्ध करे। कहा भी गया है : दीक्षा लेकर इन्द्रियों पर विजय प्राप्त कर बारह लाख मन्त्र का जप करें। तदनुसार बारह हजार मधु, घी तथा शकर से युक्त कमलपुष्पों से आहुति देनी चाहिए। जप के बाद साधक मधु, घी तथा शकर के साथ तिल से होम करें। अथवा मधु,घी तथा शहद से परिप्लुत बेल के फलों से होम करें। इस प्रकार जो उत्तम साधक विधिपूर्वक देवी की उपासना करता है, उसे धन–धान्य की समृद्धि प्राप्त होती है और वह यश से समन्वित लक्ष्मी को प्राप्त करता है। यदि साधक वक्ष–प्रमाण जल में खड़ा होकर इस मन्त्र का तीन लाख जप करे तो वह वाञ्छित धन प्राप्त करता है। साधक अशोक की समिधाओं से प्रदीप्त अग्नि में घी से सिक्त चावलों से यदि होम करे तो शीघ्र ही तीनों लोकों को वश में कर लेता है। यदि इन्द्रियजयी राजपुत्र मदार

की समिधाओं से प्रदीप्त शुद्ध अग्नि में चावल से दस लाख होम करे तो चिरन्तन राज्यश्री को प्राप्त करता है। यदि साधक खैर की समिधा से प्रदीप्त अग्नि में मधु, घी तथा शकर से युक्त चावलों से होम करे तो राजा शीघ्र वश में हो जाता है और उसकी महालक्ष्मी बढ़ती है।

बिल्वच्छायामधिवसन् बिल्वमिश्रहविष्यभुक्। सम्वत्सरद्वयं हुत्वा तत्फलैरथवाम्बुजैः।।८।।
साधकेन्द्रो महालक्ष्मीं चक्षुषा पश्यन्ति ध्रुवम्।

यदि साधक बेल की छाया में रहता हुआ और बेल से मिश्रित हविष्य का आहार करता हुआ दो वर्ष तक बेल से या कमल से हवन करे तो वह महालक्ष्मी का निश्चित रूप से दर्शन करता है।

हविषा घृतसिक्तेन पायसेन ससर्पिषा।।९।। हुत्वा श्रियमवाप्नोति नियुतं मन्त्रवित्तमः।
मधुराक्तारुणाम्भोजैर्जुहुयाल्लक्षमादरात्। न मुञ्चति रमा तस्या वंशमाभूतसम्प्लवम्।।१०।।

साधक घी से युक्त खीर तथा घी से युक्त हविष्य से दस लाख आहुति देकर लक्ष्मी को प्राप्त करता है। मधु, घी तथा शकर से सिक्त लाल कमलों से आदरपूर्वक होम करने से लक्ष्मी उसे नहीं छोडती और सारा संसार उसके वश में हो जाता है।

इत्येकाक्षरलक्ष्मीबीजमन्त्रप्रयोगः।

अथ चतुरक्षरलक्ष्मीबीजमन्त्रप्रयोगः।

ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं। इति चतुरक्षरो लक्ष्मीबीजात्मको मन्त्रः।

शारदा तिलक में मन्त्र इस प्रकार है : "ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं" यह चारों अक्षरों वाला लक्ष्मी का बीजात्मक मन्त्र है।

अस्य विधानम्

करन्यास : ॐ श्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः १। ॐ श्रीं तर्जनीभ्यां नमः २। ॐ श्रूं मध्यमाभ्यां नमः ३। ॐ श्रैं अनामिकाभ्यां नमः ४। ॐ श्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। ॐ श्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६। इति करन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ श्रीं हृदयाय नमः १। ॐ श्रीं शिरसे स्वाहा २। ॐ श्रूं शिखायै वषट् ३। ॐ श्रै कवचाय हुम् ४। ॐ श्रौं नैत्रत्रयाय वौषट् ५। ॐ श्रः अस्त्राय फट् ६। इति हृदयादिषडगन्यासः।

इस प्रकार न्यासविधि करके ध्यान करें।

अथ ध्यानम्

ॐ माणिक्यप्रतिप्रभां हिमनिभैस्तुंगैश्चतुर्भिर्गजैर्हस्ताग्राहितरत्नकुम्भसलिलै– रासिच्यमानां मुदा। हस्ताब्जैर्वरदानमम्बुजयुगाभीतीर्दधानां हरेः। कान्तां कांक्षितपारिजातलतिकां वन्दे सरोजासनाम्।।१।।

इति ध्यायेत्। अस्य पूजादिकं सर्वं पूर्ववत्। अस्य पुरश्चरणं द्वादशलक्षजपः। तथाचः
भानुलक्षं हविष्याशी जपेदन्ते सरोरुहैः। जुहुयादरुणैः फुल्लैः तत्सहस्रं जितेन्द्रियः।।१।।
कुर्यात्प्रयोगांस्तत्रस्थान्मनुना तेन साधकः। निधिभिः सेव्यते नित्यं मूर्तिमद्भिरुपासितैः।।२।।

इस प्रकार ध्यान करके सब पूजा आदि पूर्ववत् करना चाहिये। इसका पुरश्चरण बारह लाख जप है। जैसा कि कहा गया है :

साधक हविष्याशी रह कर तथा जितेन्द्रिय होकर बारह लाख मन्त्र का जप करें। जप के बाद लाल फूले हुए कमलों से बारह हजार होम करें। इसके बाद साधक मन्त्र से वहाँ प्रयोग करें। इसकी सिद्धि से निधियाँ स्वयं मूर्तिमती होकर साधक की सेवा करती हैं।

इति चतुरक्षरलक्ष्मीबीजात्मकमन्त्रप्रयोगः

अथ दशाक्षरलक्ष्मीमन्त्रप्रयोगः।

ॐ नमः कमलवासिन्यै स्वाहा। इति दशाक्षरमन्त्रः।

शारदातिलक में मन्त्र इस प्रकार है : "ॐ नमः कमलवासिन्यै स्वाहा।" यह दशाक्षर मन्त्र हैं।

विनियोग : अस्य मन्त्रस्य दक्षऋषिः विराट्छन्दः श्रीलक्ष्मीर्देवता सर्वेष्टसिद्धये जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : दक्षऋषये नमः शिरसि १। विराट्छन्दसे नमः मुखे २। श्रियै देवतायै नमः हृदि ३। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ४। इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास : ॐ देव्यै नमोंगुष्ठाभ्यां नमः १। ॐ पद्मिन्यै नमस्तर्जनीभ्यां नमः २। ॐ विष्णुपत्न्यै नमो मध्यमाभ्यां नमः ३। ॐ वरदायै नमोऽनामिकाभ्यां नमः ४। ॐ कमलायै नमः कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। इति करन्यासः।

नेत्रहीन पञ्चाङ्गन्यास : ॐ देव्यै नमो हृदयाय नमः १। ॐ पद्मिन्यै नमः शिरसे स्वाहा २। ॐ विष्णुपत्न्यै नमः शिखायै वषट् ३। ॐ वरदायै नमः कवचाय हुम् ४। ॐ कमलायै नमः अस्त्राय फट् ५। इति नेत्रहीनपञ्चाङ्गन्यासः[1]।

इस प्रकार न्यासविधि करके ध्यान करें :

अथ ध्यानम्।

ॐ आसीना सरसीरुहे स्मितमुखी हस्ताम्बुजैर्बिभ्रती दानं पद्मयुगाभये च वपुषा सौदामिनिसन्निभा। मुक्ताहारविराजमानपृथुलोत्तुङ्गस्तनोद्भासिनी पायाद्वः कमला कटाक्षविभवैरानन्दयन्ती हरिम्।।१।।

एवं ध्यात्वा पूर्वोक्तपीठशक्तिभिः सहपीठपूजां विधाय ततः स्वर्णादिनिर्मितं यन्त्रं आसनमन्त्रेणासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य पुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य वाहनादिपुष्पान्तैरुपचारैः। सम्पूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात्। तत्र क्रमः।

इस प्रकार ध्यान करके पूर्वोक्त पीठशक्तियों के साथ पीठ की पूजा करके स्वर्णादि से निर्मित यन्त्र को आसनमन्त्र से आसन देकर पीठ के मध्य में रख कर फिर ध्यान करके मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके आवाहन आदि से लेकर पुष्पाञ्जलि दान पर्यन्त उपचारों से पूजा करके देवी की आज्ञा लेकर आवरण की पूजा करें। उसमें क्रम यह है (लक्ष्मी दशाक्षर मन्त्रयन्त्र देखिये चित्र २६)

षट्कोणकेसरेषु। अग्निकोणे। ॐ देव्यै नमो हृदयाय नमः[1]।।१।। निर्ऋतिकोणे। ॐ पद्मिन्यै नमः[2] शिरसे स्वाहा २। वायव्ये। ॐ विष्णुपत्न्यै नमः[3] शिखायै वषट् ३। ईशान्ये। ॐ वरदायै नमः[4] कवचाय हुम् ४। देविपश्चिमे ॐ कमलरूपायै[5] नमोऽस्त्राय फट् ५।

इति पञ्चाङ्गानि पूजयेत्। ततः पुष्पाञ्जलिमादाय मूलमुच्चार्य ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्।।१।। इति पठित्वा पुष्पाञ्जलिं च दत्त्वा विशेषार्घाद्विन्दुं निक्षिप्य पूजितास्तर्पिताः सन्तु इति वदेत्। इति प्रथमावरणम्।।१।।

इस प्रकार पञ्चाङ्ग की पूजा करें। इसके बाद पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके "ॐ अभीष्टसिद्धिं में देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्।।१।।" साधक यह पढ़कर पुष्पाञ्जलि देकर विशेष अर्घ से विन्दु डाल कर 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' यह कहें। इति प्रथमावरण।।१।।

---

१ पञ्चाङ्गानि मनोर्यत्र तत्र नेत्रमनु त्यजेत्।

ततः पूज्यपूजकयोरन्तरालं प्राची। तदनुसारेण अन्याः दिशः प्रकल्प्याष्टदलेषु प्राचीक्रमेण।

इसके बाद पूज्य और पूजक के अन्तराल को पूर्व दिशा मानकर तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके आठों दलों में पूर्व दिशा क्रम से :

ॐ बलाक्यै नमः[६] १। ॐ विमलायै नमः[७] १। ॐ कमलायै नमः[८] ३। ॐ वनमालिकायै नमः[९] ४। ॐ विभीषकायै नमः[१०] ५। ॐ मालिकायै नमः[११] ६। शांकर्यै नमः[१२] ७। ॐ वसुमालिकायै नमः[१३] ८।

इत्यष्टौ पूजयित्वा पुष्पाञ्जलि दद्यात्। इति द्वितीयावरणम्।।२।।

इस प्रकार आठों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवें। इति द्वितीयावरण।।२।।

ततो भूपुरे पूर्वादिक्रमेण इन्द्रादीन् वज्रादींश्च पूजयेत्। इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनीराजनान्तं सम्पूज्य जपं कुर्यात्। अस्य पुरश्चरणं दशलक्षजपः। जपदशांशेन होमः तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्यात्। एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति। एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत्।

इसके बाद भूपुर में पूर्व आदि क्रम से इन्द्र आदि देवताओं तथा वज्र आदि उनके अस्त्रों की पूजा करें। इस प्रकार आवरण पूजा करके धूपदान से लेकर नीराजन तक पूजा करके जप करें। इसका पुरश्चरण दश लाख जप है। जप का दशांश होम होता है, और तत्तद्दशांश तर्पण, मार्जन तथा ब्राह्मण भोजन करें। ऐसा करने पर मन्त्र सिद्ध होता है। इसके सिद्ध होने पर साधक प्रयोगों को सिद्ध करे।

दशलक्षं जपेन्मन्त्रं मन्त्रविद्विजितेन्द्रियः। दशांशं जुहुयान्मन्त्री मधुराक्तैः सरोरुहैः।।१।। इति सम्पूज्यद्देवीं सम्पदामालयं भवेत्। समुद्रगायां सरिति कण्ठमात्रे जले स्थितः।।२।। त्रिलक्षं प्रजपेन्मन्त्री साक्षाद्वैश्रवणो भवेत्। आराध्योत्तरनक्षत्रे देवीं स्रक् चन्दनादिभिः।।३।। नन्द्यावर्तभवैः पुष्पै सहस्रं जुहुयात्ततः। पूर्णमास्यां फलैबिल्वैर्जुहुयान्मधुराप्लुतैः।।४।। पञ्चम्यां विशदाम्भोजैः शुक्रवारे सुगन्धिभिः। अन्यैर्वा विशदैः पुष्पै प्रतिमासंविशालधीः। स भवेदब्दमात्रेण सर्वदा सम्पदां निधिः।।५।।

मन्त्रविद् साधक जितेन्द्रिय होकर दश लाख मन्त्र का जप करें। जप का दशांश मधु, घी तथा शकर से सिक्त लाल कमलों से होम करें। इस प्रकार जो समुद्र में गिरने वाली नदी में कण्ठमात्र जल में खड़ा होकर देवी की पूजा करता है वह सम्पत्तियों का धाम बन जाता है। उत्तराषाढा, उत्तरा भाद्रपद तथा उत्तरा फाल्गुनी में माला तथा चन्दन आदि से देवी की पूजा करके तीन लाख जप करने साधक साक्षात् वैश्रवण बन जाता है। इसके बाद नन्द्यावर्त फूलों से एक हजार होम करें। पूर्णमासी में मधु, घी तथा शकर से युक्त वेलों से होम करें। पञ्चमी को बड़े कमल के फूलों से और शुक्रवार को सुगन्धित अन्य बड़े फूलों से हवन करें। इसके बाद पूर्णमासी में घी, मधु तथा शकर से युक्त बेल के फलों से होम करें। जो इस प्रकार करता है वह एक वर्ष में समस्त सम्पत्तियों का निधि बन जाता है।

इति दशाक्षरलक्ष्मीमन्त्रप्रयोगः।

अथ सप्तविंशत्यक्षरमहालक्ष्मीमन्त्रप्रयोगः।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीदप्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः। इति सप्तविंशत्यक्षरो मन्त्रः।

शारदातिलक में मन्त्र से प्रकार है : 'ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः" यह सत्ताइस अक्षरों का मन्त्र है।

अस्य विधानम्।

विनियोग : अस्य मन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः गायत्रीच्छन्दः श्रीमहालक्ष्मीर्देवता श्रीं बीजं नमः शक्तिः सर्वेष्टसिद्धये जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : ॐ ब्रह्मऋषये नमः शिरसि १। ॐ गायत्रीच्छन्दसे नमः मुखे २। ॐ महालक्ष्मीदेवतायै नमः हृदि ३। ॐ श्रीं बीजाय नमः गुह्ये ४। ॐ नमः शक्तये नमः पादयोः ५। ॐ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे। इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास : ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले श्रीं ह्रीं श्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः १। ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये श्रीं ह्रीं श्रीं तर्जनीभ्यां नमः २। ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं मध्यमाभ्यां नमः ३। ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं अनामिकाभ्यां नमः ४। ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै श्रीं ह्रीं श्रीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। इति करन्यासः।

नेत्रहीनपञ्चाङ्गन्यास : ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले श्रीं ह्रीं श्रीं हृदयाय नमः १। ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये श्रीं ह्रीं श्रीं शिरसे स्वाहा २। ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं शिखायै वषट् ३। ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं कवचाय हुम् ४। ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै श्रीं ह्रीं श्रीं अस्त्राय फट् ५। इति नेत्र[1] हीनपंचांगन्यासः।

इस प्रकार न्यासविधि करके ध्यान करें।

अथ ध्यानम्।

ॐ सिंदूरारुणकान्तिमब्जवसतिं सौंदर्यवारान्निधिं कोटीरांगदहार कुण्डलकटी-सूत्रादिभिर्भूषिताम्। हस्ताब्जैर्वसुपत्रमब्जयुगलादर्शौ वहन्तीं परामावीतां परिचारिकाभिरनिशं ध्यायेत्प्रियां शार्ङ्गिणः।। १।।

इति ध्यात्वा पूर्ववत् पीठपूजां विधाय स्वर्णादिनिर्मितं यन्त्रं अग्न्युत्तारणपूर्वकं आसन मन्त्रेणासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य पुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य आवाहनादिपुष्पान्तैरुपचारैः सम्पूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात्।

इस प्रकार ध्यान करके पूर्ववत् पीठपूजा करके स्वर्णादि से निर्मित यन्त्र को अग्न्युत्तारणपूर्वक आसनमन्त्र से आसन देकर पीठ के बीच में रखकर पुनः ध्यान करके मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके आवाहन से लेकर पुष्पाञ्जलिदान तक सभी उपचारों से पूजा करके देवी से आज्ञा लेकर इस प्रकार आवरण पूजा करें। (लक्ष्मी सप्तविंशत्यक्षर मन्त्रपूजन यन्त्र देखिये चित्र २७)।

षट्कोणकेसरों में :

अग्निकोणे ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले श्रीं ह्रीं श्रीं हृदयाय नमः[1]। निर्ऋतिकोणे ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये श्रीं ह्रीं श्रीं शिरसे स्वाहा[2] २। वायव्ये ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं शिखायै वषट्[3]३। ईशान्ये ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं कवचाय हुम्[4] ४। देवीपश्चिमे ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै श्रीं ह्रीं श्रीं अस्त्राय फट्[5] ५।

इति पञ्चाङ्गानि पूजयेत। ततः पुष्पाञ्जलिमादाय मूलमुच्चार्य ॐ अभिष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्।।१।। इति पठित्वा पुष्पाञ्जलि च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः सन्तु इति वदेत्। इति प्रथमावरणम्।।१।।

इस प्रकार पञ्चाङ्गों की पूजा करें। इसके बाद पुष्पांजलिं लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके

---

१ पञ्चाङ्गानि मनोर्यत्र तत्र नेत्रमनुं त्यजेत्।

"ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्।।१।।" यह पढ़कर पुष्पाञ्जलि देकर "पूजितास्तर्पिताः सन्तु" यह कहें। इति प्रथमावरण।।१।।

पूज्यपूजकयोर्मध्ये प्राचीं प्रकल्प्य ततोष्टदलेषु पूर्वादिक्रमेण।

पूज्य और पूजक के बीच पूर्व दिशा को प्रकल्पित करके पूर्वादि क्रम से आठों दलों में :

ॐ श्रीधराय[६] नमः श्रीधरश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः १। इति सर्वत्र। ॐ हृषीकेशाय नमः[७] हृषीकेशश्रीपा० २। ॐ वैकुण्ठाय नमः[८] वैकुण्ठश्रीपा० ३। ॐ विश्वरूपाय नमः[९] विश्वरूपश्रीपा० ४। ॐ वासुदेवाय नमः[१०] वासुदेवश्रीपा० ५। ॐ सङ्कर्षणाय नमः[११] सङ्कर्षणश्रीपा० ६। ॐ प्रद्युम्नाय नमः[१२] प्रद्युम्नश्रीपा० ७। ॐ अनिरुद्धाय नमः[१३] अनिरुद्धश्रीपा० ८।

इससे आठों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवें। इति द्वितीयावरण।।२।।

इसके बाद अष्टदलों के बीच पूर्वादि क्रम से :

ॐ भारत्यै नमः[१४] भारतीश्रीपा० १। ॐ पार्वत्य नमः[१५] पार्वतीश्रीपा० २। ॐ चान्द्र्यै नमः[१६] चान्द्रीश्रीपा० ३। ॐ शच्यै नमः[१७] शचीश्रीपा० ४। ॐ दमकांय नमः[१८] दमकाश्रीपा० ५। ॐ सलिलाय नमः[१९] सलिलश्रीपा० ६। ॐ गुग्गुलवे नमः[२०] गुग्गुलश्रीपा० ७। ॐ कुरुण्टकाय नमः[२१] कुरुण्टकश्रीपा० ८।

इससे आठों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवें। इति तृतीयावरण।।३।।

इसके बाद अष्टदलाग्रों में :

ॐ अनुरागाय महालक्ष्मीबाणाय नमः[२२] १। ॐ संवादाय महालक्ष्मीबाणाय नमः[२३] २। ॐ विजयाय महालक्ष्मीबाणाय नमः[२४] ३। ॐ वल्लभाय महालक्ष्मीबाणाय नमः[२५] ४। ॐ मदाय महालक्ष्मीबाणाय नमः[२६] ५। ॐ हर्षाय महालक्ष्मीबाणाय नमः[२७] ६। ॐ बलाय महालक्ष्मीबाणाय नमः[२८] ७। ॐ तेजसे महालक्ष्मीबाणाय नमः[२९] ८।

इससे आठ बाणों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवें। इति चतुर्थावरण।।४।।

ततो भूपुरे पूर्वादिक्रमेण इद्रादीन् वज्रादींश्च पूजयेत्। इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनीराजनान्तं सम्पूज्य जपं कुर्यात्। अस्य पुरश्चरणं लक्षजपः। तत्तद्दशांशेन होमतर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्यात्। एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति। एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत्। तथा चः लक्षं जपेत्फलैर्बिल्वैर्जुहुयान्मधुरोक्षितैः। दशांशसंस्कृते वह्नौ प्राक्प्रोक्तेनैव वर्त्मना।।१।। अनेन विधिना देवीं महालक्ष्मीमुपासते। ये तेषु निवसेल्लक्ष्मीरस्मरन्ती निजालयम्।।२।। उत्पलैर्जुहुयाल्लक्षं चन्दनाम्भसि लोलितैः। शत्रूणां लभते राज्यं विना युद्धेन पार्थिवः।।३।। जपन्राजसभां गच्छेत्सम्भाव्येत तया नरः।

इसके बाद भूपुर में पूर्वादि क्रम से इन्द्रादि देवताओं तथा वज्र आदि उनके आयुधों की पूजा करें। इस प्रकार आवरण पूजा करके धूपदान से लेकर नीराजन तक पूजा करके जप करें। इसका पुरश्चरण एक लाख जप है और तत्तद्दशांश होम, तर्पण, मार्जन तथा ब्राह्मण भोजन करें। ऐसा करने पर मन्त्र सिद्ध होता है। इसके सिद्ध होने पर साधक योगों को सिद्ध करे। कहा भी गया है : एक लाख मन्त्र का जप करना चाहिये। इसके बाद मधु, घी तथा शकर से युक्त बेल के फलों से पूर्वोक्त नियमानुसार दशांश होम करना चाहिये। जो लोग इस विधि से देवी की उपासना करते हैं उनके घर में देवी अपने घर को भूलकर निवास करती हैं। यदि राजा चन्दन के जल में एक लाख कमलों को सिक्त करके हवन करें तो बिना युद्ध के शत्रु के राज्य को प्राप्त करता है।

दूर्वा देवी महालक्ष्मीर्विष्णुक्रान्ता मधुव्रता ।।४।। मुशली शत्रुवल्ली च सदाभद्राऽलिप्रिया। हरिचन्दनकर्पूरचन्दनाकोलरोचनाः।।५।। मालूरकेसरौ कुष्ठं सर्वं पिष्ट्वा निशारसैः। अष्टोतरसहस्रं तुं जपित्वा तिलकक्रियाम्।।६।। कुर्वतो मन्त्रिणः सर्वे वशे तिष्ठंत्यहर्निशम्। श्रियो मन्त्रं भजेन्मन्त्री श्रीसूक्तान्यपि संजपेत्।।७।। भूयसीं श्रियमाकांक्षन् सत्यवादी भवेत्सदा। प्रत्यगाशामुखोऽश्नीयात्स्थितः पूर्वं प्रियं वदेत्।।८।। पूजयेद्गन्धपुष्पाद्यैरात्मानं नियतः शुचिः। शयीत शुद्धशय्यायां तरुण्या सह नान्यथा।।९।। नग्नो नावतरेदम्भस्तैलाभ्यक्तो न भक्षयेत्। हरिद्रां न मुखे लिम्पेन्न स्वपेदशुचिः क्वचित्।।१०।। न वृथा विलिखेद्भूमिं न बिल्वं द्रोणमम्बुजम्। धारयेन्मूर्ध्नि नैवाद्याल्लोणं तैलं च केवलम्।।११।। मलिनो न भवेज्जातु कुत्सितान्नं न भक्षयेत्। द्रोणपङ्कजबिल्वानि पद्भ्यां जातु न लङ्घयेत्।।१२।। सहदेवीमिन्द्रवल्लीं श्रीवल्लीं विष्णुवल्लभाम्। कन्याम्बुजप्रवालं च धारयेन्मूर्ध्नि सर्वदा।।१३।। इत्याचारपरो नित्यं विष्णु भक्तो दृढव्रतः। श्रियमाप्नोति महतीं देवानामपि दुर्लभाम्।।१४।।

दूब, सहदेई, लक्ष्मीबल्ली, विष्णुक्रान्ता, मधुव्रता, मुशली, इन्द्रवारुणी, नागरमोथा, लज्जालू, पीतचन्दन, कपूर, श्वेतचन्दन, अंकोल, गोरोचन, बेल, नागकेसर तथा कुछ कुष्ठ को हल्दी के रस में पीस कर एक सौ आठ मन्त्र का जप करके तिलक लगाने से मन्त्रिगण साधक के वश में होकर रातदिन तत्पर रहते हैं। अधिक धन की इच्छा करता हुआ सदा सत्याचारी रह कर साधक लक्ष्मी के मन्त्र का जप करे तथा श्रीसूक्त का भी जप करे। पूर्व की ओर मुख करके भोजन करे और पूर्व की ओर मुख करके बैठे तथा सत्य बोले। शुद्ध और जितेन्द्रिय होकर गन्ध–पुष्प आदि से साधक अपनी पूजा नित्य करे। शय्या पर युवती के साथ शयन करे अकेले नहीं। पानी में नङ्गा होकर न उतरे। तेल मर्दन करके भोजन न करें। हल्दी का लेप मुख पर न करें। कहीं पर अपवित्र होकर न शयन करें। व्यर्थ भूमि न कुरेदे। बेल, गूमा या कमल को सिर पर धारण करें और नमक या तेल अकेले–अकेले न खायें। कभी मलिन न रहें। निन्दित अन्न न खायें। गूमा, बेल तथा कमल को पैरों से कभी न लाँघे। सहदेई, इन्द्रवारुणी, लक्ष्मीलता, विष्णुक्रान्ता, घीकुआर, कमल तथा प्रवाल सदा सिरपर धारण करें। इस प्रकार के आचारों से युक्त होकर नित्य विष्णुभक्त और व्रत में निष्ठावान् होकर जो रहता है वह देवदुर्लभ महती समृद्धि को प्राप्त करता है।

इति सप्तविंशत्यक्षरमहालक्ष्मीमन्त्रप्रयोगः।

अथ द्वादशाक्षर महालक्ष्मीमन्त्रप्रयोगः।

ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सौं जगत्प्रसूत्यै नमः। इति द्वादशाक्षरो मन्त्रः।

शारदा तिलक में मन्त्र इस प्रकार है : ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सौं जगत्प्रसूत्यै नमः। यह द्वादशाक्षर मन्त्र है।

अस्य विधानम्।

विनियोग : अस्य मन्त्रस्य ब्रह्माऋषिः गायत्रीच्छन्दः श्रीजगन्माता महालक्ष्मीर्देवता श्रीं बीजं सर्वेष्टसिद्धये जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : ॐ ब्रह्मऋषये नमः शिरसि १। गायत्रीच्छन्दसे नमः मुखे २। श्रीजगन्माता महालक्ष्म्यै नमः हृदि ३। श्रीं बीजाय नमः गुह्ये ४। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ५। इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास : मूल से हाथ धोकर ॐ ऐं अंगुष्ठाभ्यां नमः १। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः २। ॐ श्रीं मध्यमाभ्यां नमः ३। ॐ क्लीं अनामिकाभ्यां नमः ४। ॐ सौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। ॐ जगत्प्रसूत्यै करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६। इति करन्यासः।

इसके बाद "ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सौं जगत्प्रसूत्यै नमः" से मस्तकादिचरणान्त व्यापक न्यास करें।

इससे न्यास करके इस प्रकार मन्त्रवर्णन्यास करें :

मन्त्रवर्णन्यास : ॐ ऐं नमः मूर्ध्नि १। ॐ ह्रीं नमः मुखे २। ॐ श्रीं नमः हृदये ३। ॐ क्लीं नमः गुह्ये ४। ॐ सौं नमः पादयोः ५। इस प्रकार न्यास करके हृदय पर हाथ रखकर सप्तवर्ण न्यास करें। इसमें क्रम यह है : ॐ जं नमः त्वचि ६। ॐ गत् नमः रक्ते ७। ॐ प्रं नमः मांसे ८। ॐ सूं नमः मेदसि ९। ॐ त्यैं नमः अस्थिन १०। ॐ नं नमः मज्जायाम् ११। ॐ मं नमः शुक्रे १२। इस प्रकार न्यास करें। इति मन्त्रवर्णन्यासः।

करन्यास : ॐ ऐं ज्ञानाय अंगुष्ठाभ्यां नमः १। ॐ ह्रीं ऐश्वर्याय तर्जनीभ्यां नमः २। ॐ श्रीं शक्तये मध्यमाभ्यां नमः ३। ॐ क्लीं बलाय अनामिकाभ्यां नमः ४। ॐ सौं वीर्याय कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। ॐ जगत्प्रसूत्यै नमस्तेजसे करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६। इति करन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ ऐं ज्ञानाय हृदयाय नमः १। ॐ ह्रीं ऐश्वर्याय शिरसे स्वाहा २। ॐ श्रीं शक्तये शिखायै वषट् ३। ॐ क्लीं बलाय कवचाय हुम् ४। ॐ सौं वीर्याय नेत्रत्रयाय वौषट् ५। ॐ जगत्प्रसूत्यै नमस्तेजसे अस्त्राय फट् ६। इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।

एवं न्यासविधिं कृत्वोद्यानस्मरणं कुर्यात्।

इस प्रकार न्यासविधि करके उद्यान का स्मरण करें। यथा :

चम्पकाशोकपुन्नागपाटलैरुपशोभितम् लवङ्गमालतीबिल्वदेवदारुनमेरुभिः।।१।। मन्दारपारिजाताद्यैः कल्पवृक्षैः सुपुष्पितैः। चन्दनैः कर्णिकारैश्च मातुलिङ्गैश्च वञ्जुलैः।।२।। दाडिमीलकुचाङ्कोलैः पूगैः कुरवकैरपि। कदलीकुन्दमन्दारनालिकेरैरलंकृतैः।।३।। अन्यैः सुगन्धि पुष्पाद्यैर्वृक्षसंघैश्च मण्डितम्। मालतीमल्लिकाजातीकेतकीशतपत्रकैः।।४।। पारन्तीतुलसीनन्द्यावर्तैर्दमनकैरपि। सर्वर्तुकुसुमोपेतैर्नमद्भिरुपशोभितम्।।५।। मन्दमारुतसंभिन्नकुसुमामोदिदिङ्मुखम्। तस्य मध्ये सदोत्फुल्लैः कुमुदोत्पलपङ्कजैः।।६।। सौगन्धिकैश्च कह्लारैर्नवैः कुवलयैरपि। हंससारसकारण्डैर्भ्रमरैश्चक्रनामभिः।।७।। अन्यैः कलकलारावैर्विहंगैरुपशोभितम्। महासरसि तन्मध्ये पुलिनेऽतिमनोहरे।।८।। परितः पारिजाताद्यं मण्डपं मणिकुट्टिमम्। उद्यदादित्यसङ्काशं भास्वरं शशिशीतलम्।।९।। चतुर्द्वारसमायुक्तं हेमप्राकार शोभितम्। रत्नोपक्लृप्तिसंशोभिकपाटाष्टकसंयुतम्।।१०।। नवरत्नसमाक्लृप्तं तुङ्गगीपुरतोरणम्। हेमदण्डसमालम्बिध्वजादलिपरिष्कृतम्।।११।। नवरत्नसमाबद्धस्तम्भराजिविराजितम्। सहस्रदीपसंयुक्तदीपं दण्डविराजितम्।।१२।। तप्तहाटकसंक्लृप्तवातायनमनोहरम्। नानावर्णांशुकोद्बद्धसुवर्णशतकोटिभिः।।१३।। किङ्किणीमल्लिकायुक्तपताकाभिरलंकृतम्। जातरूपमयै रत्नविचित्रैरतिविस्तृतैः।।१४।। माणिक्यरत्नवैदूर्यस्वर्णमालावलीयुतैः। अन्तरान्तरसम्बद्धरत्नैर्दृष्टिमनोहरैः।।१५।। विचित्रैश्चित्रवर्णैश्च वितानैरुपशोभितम्। सर्वरत्नसमायुक्तं हेमकुट्टिममुज्ज्वलम्।।१६।। केतकीमालतीजातीचम्पकोत्पलकेसरैः। मल्लिका तुलसीजातीनन्द्यावर्तकदम्बकैः।।१७।। एतैरन्यैश्च कुसुमैरलंकृतमहीतलम्। अम्बुकाश्मीरकस्तूरीमृगनाभितमालकैः।।१८।। चन्दनागुरुकर्पूरैरामोदितदिगन्तरम्। एवं सञ्चिन्त्य मनसा मण्डपं सुमनोहरम्।।१९।। तन्मध्ये भावयेन्मन्त्री पारिजातं मनोहरम्। तस्याधस्तात्स्मरेन्मन्त्री रत्नसिंहासनं शुभम् तस्मिन्सञ्चिंतयेद्देवीं महालक्ष्मीं मनोरमाम्।।२०।।

इत्युद्यानस्मरणं कृत्वा महालक्ष्मीं ध्यायेत्।

इस प्रकार उद्यान का स्मरण करके महालक्ष्मी का ध्यान करें।

अथ ध्यानम् :

बालार्कद्युतिमिन्दुखण्डविलसत्कोटीरहारोज्ज्वलां रत्नाकल्पविभूषितां कुचनतां शालैः करैर्मअरीम्। पद्मं कौस्तुभरत्नमप्यविरतं सम्बिभ्रतीं सस्मितां फुल्लाम्भोजविलोचनत्रययुतां ध्यायेत्परां देवताम्।।१।। सिअन्मअीरसंशोभिपदाम्भोजविराजिताम्। नवरत्नगणाकीर्ण–काञ्चीदामविभूषिताम्।।२।। मुक्तामाणिक्यवैदूर्यसम्बद्धोदरबन्धनाम्। विभ्राजमानां मध्येन वलित्रितयशोभिताम्।।३।। जाह्नवीसरिदावर्तशोभिनाभिविभूषिताम्। पाटीरपङ्क कर्पूरकुम्कुगालंकृतस्तनीम्।।४।। वारिवाहविनिर्मुक्तमुक्तादामगरीयसीम्। वहन्तीमुत्तरासङ्गं दुकूलपरिकल्पिताम्।।५।। तप्तकाञ्चनसन्नद्धवैदूर्याङ्गदभूषणाम्। पद्मरागस्फुरद्वर्णकङ्कणाढ्यकराम्बुजाम्।।६।। माणिक्यशकलाबद्धमुद्रिकाभिरलंकृताम्। तप्तहाटकसंक्लृप्तमालग्रैवेयशोभिताम्।।७।। विचित्रविविधाकल्पकम्बुसंकाशकन्धराम्। उद्यद्दिनकराकारमणिताटङ्कमण्डिताम्।।८।। रत्नाङ्कितलसत्स्वर्णकर्णपूरोपशोभिताम्। जयाविद्रुमलावण्यललिताधरपल्लवाम्।।९।। दाडिमीफलबीजाभदन्तपंक्तिविभूषिताम्। कलङ्ककार्श्यनिर्मुक्तशरच्चन्द्रनिभाननाम्।।१०।। पुण्डरीकदलाकारनयनत्रय सुन्दरीम्। भ्रूलताजितकन्दर्पकरकार्मुकविभ्रमाम्।।११।। विलसत्तिलपुष्पश्रीविजयोद्यतनासिकाम्। ललाटकान्तिविभवविजितार्द्धसुधाकराम।।१२।। सान्द्रसौरभसम्पन्नकस्तूरीतिलकांकिताम्। मत्तालिमालाविलसदलकाढ्यमुखाम्बुजाम्।।१३।। पारिजातप्रसूनश्रीवाहिधम्मिल्लबन्धनाम्। अनर्घ्यरत्नघटितमुकुटाङ्कितमस्तकाम्।।१४।। सर्वलावण्यवसतिं भवनं विभ्रमश्रियः। तेजसां जन्मभूमिं तां महालक्ष्मीं मनोहराम्।।१५।।

इति ध्यात्वा सर्वतोभद्रमण्डले पूर्ववत पीठपूजां विधाय स्वर्णादिनिर्मितं यन्त्रं अग्न्युत्तारणपूर्वकं आसनमन्त्रेणासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य पुनर्ध्यात्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य आवाहनादिपुष्पान्तैरुपचारैः सम्पूज्य देव्याज्ञां गृहत्वा आवरणपूजां कुर्यात्। तत्र क्रमः।

इस प्रकार ध्यान करके सर्वतोभद्रमण्डल में पूर्ववत् पीठपूजा करके स्वर्ण आदि से निर्मित यन्त्र को अग्न्युत्तारणपूर्वक आसनमन्त्र से आसन देकर पीठ के बीच में स्थापित करके पुनः ध्यान करके मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना कर आवाहन आदि से लेकर पुष्पाअलिदान तक सभी उपचारों से पूजा करके देवी से आज्ञा लेकर आवरण पूजा करें। उसमें क्रम यह है (द्वादशाक्षर महालक्ष्मी मन्त्रयन्त्र, देखिये चित्र २८)।

देव्या दक्षिणे ॐ शंकरनन्दनाय नमः[1]। शंकरनन्दनश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ननः १। एवं सर्वत्र[1]। देव्या वामे ॐ पुष्पधन्वने[2] नमः। पुष्पधन्वश्रीपा०।।२।। इति पूजयेत्।

ततः पुष्पाअलिमादाय मूलमुच्चार्य ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्। इति पठित्वा पुष्पाअलिं च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः सन्तु इति वदेत्। इति प्रथमावरणम्।।१।।

---

१ श्रीपदं पूर्वमुच्चार्य पादुकापदमुद्धरेत्। पूज्यामि नमः पश्चात्पूजयेदङ्गदेवताः।

इसके बाद पुष्पाञ्जलि लेकर मूल का उच्चारण करके "ॐ अभीष्टसिद्धि मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्।" यह पढ़ कर पुष्पाञ्जलि देकर "पूजितास्तर्पिताः सन्तु" यह कहें। इति प्रथमावरण।।१।।

इसके बाद षट्कोण–केसरा में :

अग्निकोणे ॐ ऐं ज्ञानाय हृदयाय नमः[३]। हृदयश्रीपा० १। निर्ऋतिकोणे ॐ ह्रीं ऐश्वर्याय शिरसेस्वाहा[४]। शिरः श्रीपा० २। वायव्ये ॐ श्रीं शक्तये शिखायै[५] वषट्। शिखाश्रीपा० ३। ईशान्ये ॐ क्लीं बलाय कवचाय[६] हुम्। कवचश्रीपा० ४। पूज्यपूजकयोर्मध्ये ॐ सौवीर्याय नेत्रत्रयाय वौषट्[७]। नेत्रत्रयश्रीपा० ५। देव्याः पश्चिमे ॐ जगत्प्रसूत्यै नमस्तेजसे अस्त्राय[८] फट्। अस्त्रश्रीपा० ६।

इससे षड्गों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवें। इति द्वितीयावरण।।२।।

ततोष्टदलेषु पूज्यपूजकयोर्मध्ये प्राची। तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य पूर्वादिक्रमेण।

इसके बाद अष्टदलों में पूज्य और पूजक के अन्तराल को पूर्व दिशा मान कर और तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके पूर्वादि क्रम से :

ॐ उमायै नमः[९]। उमाश्रीपा० १। ॐ श्रियै नमः[१०]। श्रीश्रीपा० २। ॐ सरस्वत्यै नमः[११]। सरस्वतीश्रीपा० ३। ॐ दुर्गायै नमः[१२]। दुर्गाश्रीपादुकां पू० ४। ॐ धरण्यै नमः[१३] धरणिश्रीपा० ५। ॐ गायत्र्यै नमः[१४]। गायत्रीश्रीपा० ६। ॐ देव्यै नमः[१५]। देवीश्रीपा० ७। ॐ उषायै नमः[१६]। उषाश्रीपा० ८।

इस प्रकार आठ शक्तियों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवें। इति तृतीयावरण।।३।।

इसके बाद देवी के दक्षिण :

ॐ जह्नुसुतायै नमः[१७]। जह्नु सुताश्रीपा० १। देव्यो वामे ॐ सूर्यसुतायै नमः[१८] सूर्यसुताश्रीपा० २। ततः पुनर्देव्या दक्षिणे ॐ शङ्खनिधये नमः[१९]। शङ्खनिधिश्रीपा. ३। पुनर्देव्या वामे ॐ पद्मनिधये नमः[२०]। पद्मनिधिश्रीपा० ४।

पश्चिमे धृतातपत्रं वरुणं पूजयित्वा पुष्पाञ्जलि दद्यात्। इति चातुर्थावरणम्।।४।।

पश्चिम में आतपत्र (छत्र) धारी वरुण की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवें। इति चतुर्थावरण।।४।।

इसके बाद अष्टदलाग्रों में पूर्वादि क्रम से :

ॐ सूर्याय नमः[२१]। सूर्यश्रीपा० १। ॐ सोमाय नमः[२२]। सोमश्रीपा० २। ॐ भौमाय नमः[२३]। भौमश्रीपा० ३। ॐ बुधाय नमः[२४]। बुधश्रीपा० ४। ॐ बृहस्पतये नमः[२५]। बृहस्पतिश्रीपा० ५। ॐ शुक्राय नमः[२६]। शुक्रश्रीपा० ६। ॐ शनैश्चराय नमः[२७]। शनैश्चरश्रीपा० ७। ॐ राहवे केतवे नमः[२८]। राहुकेतुश्रीपा० ८।

इससे नव ग्रहों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवें। इति पञ्चमावरण।।५।।

इसके बाद भूपुर के भीतर :

ॐ ऐरावताय नमः[२९]। ऐरावतश्रीपा० १। ॐ पुण्डरीकाय नमः[३०]। पुण्डरीकश्रीपा० २। ॐ वामनाय नमः[३१]। वामनश्रीपा० ३। ॐ कुमुदाय नमः[३२]। कुमुदश्रीपा० ४। ॐ अञ्जनाय नमः[३३]। अञ्जनश्रीपा० ५। ॐ पुष्पदन्ताय नमः[३४]। पुष्पदन्तश्रीपा० ६। ॐ सार्वभौमाय नमः[३५]। सार्वभौमश्रीपा० ७। ॐ सुप्रतीकाय नमः[३६]। सुप्रतीकश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ८।

इससे आठ दिग्गजों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवें। इति षष्ठावरण।।६।।

इसके बाद भूपुर में इन्द्रादि देवताओं तथा उनके वज्रादि आयुधों की पूजा करें :

इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनीराजनान्तं सम्पूज्य पुनर्ध्यात्वा जपं कुर्यात्। अस्य पुरश्चरणं द्वादशलक्षजपः। जपदशांशतो घृतहोमः। पुनः श्रीफलैः पद्मैः प्रत्येकमयुत होमः।

ततोयुतद्वयमितं तर्पणं कुर्यात्। एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति। एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत्। तथाच : भानुलक्षं जपेन्मन्त्रं दशांशं जुहुयाद्घृतैः। जुहुयाच्छीफलैः पद्यैः प्रत्येकमयुतं ततः।।१।। तर्पयेत्सतिलैः शुद्धैः सुगन्धैरयुतद्वयम्। आगमोक्तेन विधिना सुगन्धैः सुमनोहरैः। पूजयेद्गंधपुष्पाद्यैर्देवीमन्वहमादरत्।।२।।

इस प्रकार आवरण पूजा करके धूपादि दान से नीराजनान्त पूजा करके पुनः ध्यान करके जप करें। इसका पुरश्चरण बारह लाख जप है। जप का दशांश घी से होम करना है। पुनः बेल तथा कमल प्रत्येक से दश–दश हजार होम करना है। इसके बाद बीस हजार बार तर्पण करें। ऐसा करने पर मन्त्र सिद्ध होता है। इस मन्त्र के सिद्ध होने पर साधक प्रयोगों को सिद्ध करें। बारह लाख जप करना चाहिये। उसका दशांश घी से होम करना चाहिये। इसके बाद बेल तथा कमल प्रत्येक से दश–दश हजार होम करना चाहिये। इसके बाद शुद्ध सुगन्धित तिल सहित जल से बीस हजार बार तर्पण तथा आगमोक्त विधि से सुगन्धित और सुन्दर फूलों तथा गन्ध, पुष्प, पाद्य आदि से देवी का आदरपूर्वक पूजन करें।

दूर्वाभिराज्यसिक्ताभिर्जुहुयादायुषे नरः। दशरात्रं समिद्धेऽग्नावष्टोत्तरसहस्रकम्।।३।। गुडूचीराज्यसंसिक्ता जुहुयात्सप्तवासरम्। अष्टोत्तरसहस्रं यः स जीवेच्छरदां शतम्।।४।। हुत्वा तिलान् धृताभ्यक्तान्दीर्घपायुरवाप्नुयात्। आरभ्यार्क दिनं मन्त्री दशरात्रं दिनेदिने।।५।। आज्यात्कार्कसमिद्धोमादारोग्यं लभते ध्रुवम्। कण्ठमात्रोदके स्थित्वा ध्यात्वा देवीं दिवाकरे।।६।। ऊर्ध्वबाहुर्दशशतमष्टोत्तरमिमं हुनेत्। आरोग्यं लभते सद्यो वाञ्छितान्यपि मन्त्रवित्।।७।।

मनुष्य आयु की प्राप्ति के लिए प्रदीप्त अग्नि में एक हजार आठ बार घी से सिक्त दूबों से दश रात्रि तक होम करें। घी से युक्त गिलोय से सात दिन तक जो एक हजार आठ बार होम करता है, वह सौ वर्ष तक जीवित रहता है। रविवार से प्रारम्भ करके दश रात्रियों तक प्रतिदिन जो घी से सिक्त तिलों से होम करता है वह दीर्घायु प्राप्त करता है। घी में सिक्त मदार की समिधाओं से होम करने से मनुष्य निश्चित रूप से आरोग्य प्राप्त करता है। जो साधक कण्ठ तक जल में सूर्योदय के समय खड़ा होकर दोनों हाथों को ऊपर उठा कर देवी का ध्यान करके एक हजार आठ आहुतियों का होम करता है वह तत्काल आरोग्य प्राप्त करता है और उसकी कामनायें भी पूर्ण हो जाती हैं।

शालीभिर्जुह्वतो नित्यमष्टोत्तरसहस्रकम्। अचिरादेव महती लक्ष्मीः सआयते ध्रुवम्।।८।। प्रसूनैर्जुहुयान्मन्त्री लक्ष्मीवल्लीसमुद्भवैः। नन्द्यावर्त समुत्थैश्च सिद्धार्थैश्च घृताप्लुतैः। महतीं श्रियमाप्नोति मान्यते सर्वजन्तुभिः।।९।।

चावल से नित्य होम करनेवाले को भी शीघ्र ही निश्चित रूप से महती लक्ष्मी प्राप्त होती है। घृत से युक्त लक्ष्मीवल्ली (मेषशृङ्गी) और नन्द्यावर्त के पुष्पों से तथा पीली सरसों से जो साधक होम करता है वह भी महती समृद्धि को प्राप्त करता है तथा समस्त प्राणियों में मान्य होता है।

मरीचजीरकोन्मिश्रैर्नारिकेलरजः प्लुतैः। सगुडैराज्यसम्पक्वैरपूपैराज्यलोलितैः ।। जुहुयात्पायसाहारो मन्त्रविद्विजितेन्द्रियः।।१०।। अष्टोत्तरशतं नित्यं मण्डलाद्धनदो भवेत्।

खीर का आहार करता हुआ जितेन्द्रिय होकर जो मन्त्रविद् साधक काली मिर्च, जीरा तथा नारियल के रज से प्लुत गुड़ सहित घी में पके घृतप्लुत पूओं से एक सौ आठ आहुतियों द्वारा नित्य होम करता है वह उनचास दिन में कुबेर के समान धनवान हो जाता है।

हविषा गुडमिश्रेण जुहुयादर्थवान्भवेत्।।११।। जया पुष्पाणि जुहुयादष्टोत्तरसहस्रकम्। गृहीत्वा प्रजपेद्भस्म नागवल्लीसमन्वितम्।।१२।। तिलकं तनुयात्तेन सर्ववश्यकरोभवेत्।

गुड़मिश्रित हविष्य से होम करने से साधक धनवान होता है। जपापुष्पों से एक हजार आठ बार होम करने से, उसकी भस्म को नागवल्ली से समन्वित कर जप करके उससे तिलक लगाने से साधक सभी को वश में कर लेता है।

ब्रह्म वृक्षसमित्पुष्पैर्ब्राह्मणान्वशयेद्वशी।।१३।।

पलाश की समिधाओं और पुष्पों से होम करने से साधक ब्राह्मणों को वश में कर लेता है।

जातीपुष्पैश्च राजानं वैश्यान् रक्तोत्पलैः शुभैः। शूद्रान्नीलोत्पलैर्हुत्वा वशयेन्मन्त्रविन्नरः।।१४।।

चमेली के पुष्पों से होम करने साधक राजा को, शुभ लाल कमलों से होम करने से वैश्यों का तथा नीले कमलों से होम करने से शूद्रों को वश में कर लेता है।

पुष्पैर्मधूकजैर्हुत्वा वशमानयति स्त्रियः।

महुये के पुष्पों से होम करने से साधक स्त्रियों को वश में कर लेता है।

कृत्वा नवपदात्मानं मण्डलं यन्त्रभूषितम्।।१५।। अभिषेकं प्रकुर्वीत विधिना सर्वसिद्धये। कलशान्स्थापयेत्तेषु पदेषु शुभलक्षणान्।।१६।। चन्दनालिप्तसर्वाङ्गान् दूर्वाक्षतसमन्वितान्। दुकूलवेष्टितानेतान्पूरयेत्तीर्थवारिणा।।१७।। नवरत्नसमाबद्धं कर्षकाञ्चनकल्पितम्। मध्यकुम्भे क्षिपेत्पद्मं यन्त्राढ्यं देशिकोत्तमः।।१८।। चन्दनोशीरकर्पूरजातीकङ्कोलकुंकुमम्। कुष्ठागरुतमालैलायुतं सम्पिष्य भागतः।।१९।। बिलोड्य सर्वकुम्भेषु रत्नान्यापि विनिक्षिपेत्। लक्ष्मीदूर्वासदाभद्रासहदेवीमधुव्रताः।।२०।। मुशर्ली शक्रवल्लीं च क्रान्तापामार्गपत्रकान्। प्रियंगुमुद्गगोधूमव्रीहींश्च सतिलान्यवान्।।२१।। शालितण्डुलमाषांश्च प्रक्षाल्यैतेषु निक्षिपेत्। धात्रीलकुचबिल्वानां कदलीनालिकेरयोः।।२२।। फलान्यपि विनिक्षिप्य पुष्पाण्येतानि निक्षिपेत्। पद्मं सौगन्धिकं जातिं मल्लिकां बकुलं तथा।।२३।। चम्पकाशोकपुन्नागतुलसीकेतकोद्भवान्। पल्लवान्वटाश्वत्थप्लक्षोदुंबर–शाखिनाम्।।२४।। बह्मकूर्चं विनिक्षिप्य चम्पकैः सफलान्वितैः पिधाय कुम्भवक्त्राणि क्षौमैराच्छादयेत्ततः।।२५।। आवाह्य मध्यकलशे महालक्ष्मीं प्रपूजयेत्। यजेदुमाद्याः शिष्टेषु कलशेष्वष्टसु क्रमात्।।२६।। गन्धैर्मनोहरैः पुष्पैर्धूपदीपसमन्वितैः। निवेद्य भक्ष्यभोज्यानि तान्स्पृष्ट्वा प्रजपेन्मनुम्।।२७।।

यन्त्रभूषित नवपदात्मक मण्डल को लिख कर (शारदातिलकटीकायां राघवभट्टः नवपदात्मानं तृतीयोक्त नवनामयन्त्रभूषित वक्ष्यमाण यन्त्र तन्मध्य पद्मकर्णिकायां लिखेदित्यर्थः) सर्वसिद्धयों के लिए उसका विधिवत् अभिषेक करें। तदनन्तर प्रत्येक पद में चन्दन से सर्वाङ्ग लिप्त एवं दूर्वा तथा अक्षतों से समन्वित उत्तम लक्षणयुक्त कलशों की स्थापना करें। फिर उन्हें रेशमी वस्त्रों से वेष्टित करके उनमें तीर्थों का जल भर दें। उत्तम आचार्य को चाहिये कि नव रत्नों से समाबद्ध एक कर्ष स्वर्ण से कल्पित और यन्त्र से संयुक्त पद्म को मध्य कुम्भ में डाल दें। चन्दन, उशीर, कपूर, जाती, कङ्कोल, कुंकुम, कुष्ठ, अगर, तमाल तथा एला समान भाग पीस कर सभी कुम्भों में विलोडित करें तथा रत्न भी डाल दें। लक्ष्मी, दूर्वा, सदाभद्रा, सहदेवी, मधुव्रता, मुशली, शक्रवल्ली, क्रान्ता, अपामार्ग, इनके पत्रों को और प्रियंगु, मृद्ग, गोधूम, ब्रीहि, तिल, यव, शालितण्डुल तथा माष इस सबको धोकर उक्त कुम्भों में डाल दें। धात्री, लकुच,

बिल्व, कदली तथा नारियल के फलों को भी उनमें डाल दें। पद्म, सौगन्धिक, जाती मल्लिका, बकुल, चम्पा, अशोक, पुन्नाग, तुलसी तथा केतकी के पुष्प भी उनमें डालें। वट, अश्वत्थ, प्लक्ष तथा उदुम्बर वृक्षों के पत्रों और सफलान्वित चम्पक के साथ ब्रह्मकूर्च को निक्षिप्त करके कुम्भों के मुखों को बन्द कर क्षौमवस्त्रों से उन्हें ढँक दें। मध्य कलश में लक्ष्मी का आवाहन करके उनकी पूजा करें। शेष आठ कलशों में उमा की पूजा करें। मनोहर गन्धमय पुष्पों से धूप–दीप के साथ भक्ष्य–भोज्य द्रव्यों का निवेदन कर उन कुम्भों का स्पर्श करके मन्त्र का जप करें।

त्रिसहस्रं जपस्यान्ते साध्यमानीय संयतम्। संस्थाप्य स्थण्डिले पीठं तस्मिंस्तं विनिवेशयेत्।।२८।। रम्यैरावरणैर्वस्त्रैरलंकृत्य तमादरात्। सुमङ्गलाभिर्नारीभिः क्षिप्तपुष्पाक्षतान्वितम्।।२९।। अर्चितानां द्विजातीनामाशीर्वादपुरःसरम्। नदत्सु पञ्चवाद्येषु मुहुर्ते शोभने सुधीः।।३०।। मध्यस्थं कुम्भमुत्सृज्य महालक्ष्मीमनुस्मरन्। अभिषिञ्चेत्क्रमादन्यैः कलशैरपि देशिकः।।३१।। करेणास्य शिरः स्पृष्ट्वा प्रयुञ्जीताशिषं गुरुम्। भद्रमस्तु शिवं चास्तु महालक्ष्मीः प्रसीदतु।।३२।। रक्षन्तु त्वां सदा देवाः सम्पदः सन्तु सर्वदा। अथोत्थायाभिषिक्तः सन् वाससी परिधाय च।।३३।। यथाविधि समाचम्य दण्डवत्प्रणमेद्गुरुम्। वस्त्रैराभरणैर्धान्यैर्धनैर्गोमहिषादिभिः।।३४।। दासीदासैश्च विधिवत्तोषयेद्देवताधिया। ब्राह्मणान्भोजयेत्पश्चाद्दीनांधकृपणैः सह।।३५।। महान्तमुत्सवं कुर्याद्भवने बन्धुभिः सह। तदा कृतार्थमात्मानं मन्यते मनुजोत्तमः।।३६।। अभिषिक्तो नरपतिः परान् विजयतेऽचिरात्। पदेच्छुः पदमाप्नोति राजपुत्रो न संशयः।।३७।। अभिषिक्ता सती वन्ध्या सूते पुत्रं महामतिम्। महारोगेषु जातेषु कृत्याद्रोहेषु देशिकः।।३८।। भूतेषु दुर्निमित्तादौ विदध्याद–भिषेचनम्। सर्वसम्पत्करं पुंसां सर्वसौभाग्यसिद्धिदम्।।३९।। सर्वरोगप्रशमनं सर्वापद्विनिवारणम्। गर्भरक्षाकरं स्त्रीणां दीर्घायुर्जनकं परम्।।४०।। प्रसूतानामपि स्त्रीणां सूतिकागाररक्षकम्। प्रनष्टपुष्पगर्भाणां पुष्पगर्भाभिरक्षणम्।।४१।। आसन्नशत्रुभीतानां नाशनं च महीभृताम्। अभिषेकमिमं प्राहुरागमार्थविशारदाः।।४२।।

तीन हजार जप के बाद साधक संयत साध्य को लाकर स्थण्डिल पर पीठ की स्थापना कर उसपर उसे रम्य वस्त्राभूषणों से अलंकृत करके आदरपूर्वक बैठायें। उसके ऊपर सुमङ्गली नारियों से पुष्प और अक्षत का प्रक्षेपण करायें। पूजित विप्रों के आशीर्वादपूर्वक पाँच वाद्यों के बजाये जाने पर शुभ मुहूर्त में महालक्ष्मी का स्मरण करते हुए मध्य में स्थित कलश को उठाकर साधक यजमान को स्नान करायें। इसी प्रकार अन्य कलशों से भी स्नान करायें। गुरु अपने हाथ से यजमान के शिर को स्पर्श करके आशीर्वाद दे कि "तुम्हारा कल्याण हो, मङ्गल हो, लक्ष्मीजी तुम पर प्रसन्न हों। सभी देवता तुम्हारी रक्षा करें।" इसके बाद यजमान स्नान करके उठे और दो वस्त्र धारण करे: एक अधोवस्त्र और एक उत्तरीय। तदनन्तर यथाविधि आचमन करके गुरु को दण्डवत् प्रणाम करे तथा वस्त्र, आभूषण, धन, धान्य, गाय, भैंस, दास, दासी आदि द्वारा देवबुद्धि से उनका सत्कार करें। इसके बाद ब्राह्मणों को भोजन करायें। तदनन्तर निर्धन, अन्धे, लङ्गड़े, लूले, अपङ्ग आदि को भोजन करायें। अपने घर में बन्धु–बान्धवों के साथ भारी उत्सव करें। तब वह उत्तम पुरुष अपने को कृतार्थ समझता है। वह अभिषिक्त होकर शत्रुओं को शीघ्र जीत लेता है। पद चाहने वाला राजपुत्र पद प्राप्त करता है। बन्ध्या स्त्री अभिषिक्त होकर अत्यन्त बुद्धिमान् पुत्र को जन्म देती है। महारोग होने पर, कृत्या–द्रोह होने पर, प्राणियों में कोई दैवी बाधा उपस्थित होने पर साधक अभिषेक करें। मनुष्यों को समस्त सम्पत्तियों को देने वाला, सभी सौभाग्य और

सिद्धियों को देने वाला, सभी रोगों को शमन करने वाला, स्त्रियों के गर्भ का रक्षक, दीर्घ आयु का जनक, जच्चा –बच्चा के घर की रक्षा करने वाला, जिन स्त्रियों का रजोधर्म नष्ट हो गया है उनके पुष्प और गर्भ की रक्षा करने वाला, निकट आये शत्रु से डरे हुए राजाओं के शत्रु का नाश करने वाला, आगम शास्त्र के विद्वानों ने इस अभिषेक को कहा है।

इति द्वादशाक्षरलक्ष्मीमन्त्रप्रयोगः।

अथ त्रयोविंशत्यक्षरलक्ष्मीमन्त्रप्रयोगः।

प्राकृत ग्रन्थ में मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीरागच्छागच्छ मम मन्दिरे तिष्ठतिष्ठ स्वाहा।

यह तेईस अक्षरों वाला मन्त्र है।

अस्य विधानम् :

अष्टोत्तरशतं प्रतिदिनं जपेत्। लक्ष्मीः प्रसन्ना भवति द्रव्यं च ददाति।

प्रतिदिन एक सौ आठ बार जपने से लक्ष्मी प्रसन्न हो द्रव्य प्रदान करती हैं।

इति त्रयोविंशत्यक्षरलक्ष्मीमन्त्रप्रयोगः।

अथ सिद्धलक्ष्म्येकादशाक्षरमन्त्रप्रयोगः।

मन्त्र इस प्रकार है : ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्धलक्ष्म्यै नमः। इति मन्त्रः।

अस्य विधानम् :

विनियोगः ॐ अस्य श्रीसिद्धलक्ष्मीमन्त्रस्य हिरण्यगर्भऋषिः अनुष्टुप्छन्दः श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यो देवताः श्रीं बीजं ह्रीं शक्तिः क्लीं कीलकं मम सर्वक्लेशपीडापरिहारार्थं सर्वदुःखदारिद्र्यनाशनार्थं सर्वकार्यसिद्ध्यर्थं च श्रीसिद्ध–लक्ष्मी–मन्त्रजपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : ॐ हिरण्यगर्भऋषये नमः शिरसि १। अनुष्टप्छन्दसे नमः मुखे २। श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवताभ्यो नमः हृदि ३। श्रीं बीजाय नमः लिङ्गे ४। ह्रीं शक्तये नमः पादयोः ५। क्लीं कीलकाय नमो नाभौ ६। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गेषु ७। इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास : ॐ श्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः १। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः २। ॐ क्लीं मध्यमाभ्यां नमः ३। ॐ श्रीं अनामिकाभ्यां नमः ४। ॐ सिद्धलक्ष्म्यै कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। ॐ नमः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। इति करन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ श्रीं हृदयाय नमः १। ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा २। ॐ क्लीं शिखायै वषट् ३। ॐ श्रीं कवचाय हुम् ४। ॐ सिद्धलक्ष्म्यै नेत्रत्रयाय वौषट् ५। ॐ नमः अस्त्राय फट् ६। इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।

अथ ध्यानम् :

ब्राह्मीं च वैष्णवीं भद्रां षड्भुजां च चतुर्मुखीम्। त्रिनेत्रां खड्गशूलाभी पद्मचक्रगदा–धराम्।।१।। पीताम्बरधरां देवीं नानालङ्कारभूषिताम्। तेजः पुञ्जधरीं श्रेष्ठीं ध्यायेद्बालकुमारिकाम्।।२।।

इति ध्यात्वा पूर्वोक्तपीठपूजां विधाय ततः स्वर्णादिनिर्मितं यन्त्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण प्रोक्ष्य ॐ सिद्धलक्ष्मीपद्मपीठाय नमः इत्यासनमन्त्रेणासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य पुनर्ध्यात्वा

मूलेनावाहनादिपञ्चोपचारैः सम्पूज्य देवीं ध्यात्वा मूलमन्त्रं जपेत्। अस्य पुरश्चरणमेकलक्षजपः। तत्तद्दशांशेन होमतर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्यात्। एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति। एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत्। तथा च रौप्यदीपमादाय गोघृतेनापूर्य एकादशतन्तुभिः पुष्पवर्तिकां निक्षिप्य मूलेन दीपं समर्पयामि। इति प्रज्वाल्य पूर्वाभिमुखं स्थित्वा शर्कराया नैवेद्यं निवेद्य स्फटिकमालामादाय हृदये धारयन् देवीं ध्यात्वा मन्त्रार्थं स्मरन् त्रिसन्ध्यं मूलमन्त्रमष्टोत्तर शतं प्रतिदिनं जपेत्। जपादौ जपान्ते च स्तोत्रं पठेत्।

इससे ध्यान करके पूर्वोक्त पीठपूजा करके स्वर्णादि से निर्मित यन्त्र या मूर्ति को ताम्रपात्र में रख कर घी से उसका अभ्यङ्ग करके उस पर दूध तथा जल की धारा देकर स्वच्छ वस्त्र से उसे पोंछ कर "ॐ सिद्धलक्ष्मी पद्मपीठाय नमः" इस आसनमन्त्र से आसन देकर पीठ के मध्य में स्थापित करके मूलमन्त्र से आवाहन से लेकर पञ्चोपचारों से पूजा करके देवी का ध्यान करके मूलमन्त्र का जप करें। इसका पुरश्चरण एक लाख जप है। उसका दशांश होम तथा तत्तद्दशांश तर्पण, मार्जन और ब्राह्मण भोजन करें। इस प्रकार करने मन्त्र सिद्ध होता है। इस मन्त्र के सिद्ध होने पर साधक प्रयोगों को सिद्ध करें और चाँदी का दीपक लेकर गोघृत से भरकर ग्यारह तन्तुओं से पुष्पवर्तिका बनाकर उस दीपक में रख दें। मूलमन्त्र से "दीपं समर्पयामि" इससे जलाकर पूरब की ओर मुख करके शकर का नैवेद्य देकर स्फटिक की माला लेकर हृदय में धारण करते हुए देवी का ध्यान करके मन्त्र के अर्थ का स्मरण करते हुए प्रातः, मध्याह्न तथा सायं तीनों सन्ध्याओं में मूलमन्त्र का एक सौ आठ बार प्रतिदिन जप करें। जप के प्रारम्भ में तथा जप के अन्त में स्तोत्र का पाठ करें।

सिद्धलक्ष्मीस्तोत्र

विनियोग : ॐ अस्य श्रीसिद्धलक्ष्मीस्तोत्रमन्त्रस्य हिरण्यगर्भऋषिः अनुष्टुप्छन्दः श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यो देवताः श्रीं बीजं ह्रीं शक्तिः क्लीं कीलकं मम सर्वक्लेशपीडापरिहारार्थं सर्वदुःखदारिद्र्यनाशनार्थं सर्वकार्यसिध्यर्थं च श्रीसिद्धलक्ष्मीस्तोत्रपाठे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : ॐ हिरण्यगर्भऋषये नमः शिरसि १। अनुष्टुप्छन्दसे नमो मुखे २। श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवताभ्यो नमो हृदिः ३। श्रीं बीजाय नमो गुह्ये ४। ह्रीं शक्तये नमः पादयोः ५। क्लीं कीलकाय नमो नाभौ। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गेषु।।७।। इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास : ॐ श्रीं सिद्धलक्ष्म्यै अंगुष्ठाभ्यां नमः १। ॐ ह्रीं विष्णुतेजसे तर्जनीभ्यां नमः २। ॐ क्लीं अमुतानन्दायै मध्यमाभ्यां नमः ३। ॐ श्रीं दैत्यमालिन्यै अनामिकाभ्यां नमः ४। ॐ ह्रीं तेजःप्रकाशिन्यै कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। ॐ क्लीं ब्राह्मयै वैष्णव्यै रुद्राण्यै करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६। इति करन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ श्रीं सिद्धलक्ष्म्यै हृदयाय नमः १। ॐ ह्रीं विष्णुतेजसे शिरसे स्वाहा २। ॐ क्लीं अमृतानन्दायै शिखायै वषट् ३। ॐ श्रीं दैत्य मालिन्यै कवचाय हुम् ४। ॐ ह्री तेजःप्रकाशिन्यै नेत्रत्रयाय वौषट् ५। ॐ क्लीं ब्राह्मयै वैष्णव्यै रुद्राण्यै अस्त्राय फट्।।६।। इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्धलक्ष्म्यै नमः। इति मन्त्रेण तालत्रयं दिग्बन्धनं च कुर्यात्।

"ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्धलक्ष्म्यै नमः" इस मन्त्र से तीन ताल द्वारा दिग्बन्धन करें।

अथ ध्यानम्।

ब्राह्मीं च वैष्णवीं भद्रां षड्भुजां च चतुर्मुखीम्। त्रिनेत्रां खड्गत्रिशूलपद्मचक्रगदा धराम्।।१।। पीताम्बरधरां देवीं नानालङ्कारभूषिताम्। तेजःपुञ्जधरीं श्रेष्ठां ध्यायेद्बाल-कुमारिकाम्।।२।।

इस प्रकार ध्यान करके स्तोत्र का पाठ करें।

ॐकारं लक्ष्मीरूपं तु विष्णुं हृदयमव्ययम् विष्णुमानन्दमव्यक्तं ह्रींकारं बीजरूपिणीम्।।१।। कलीं अमृतानन्दनीं भद्रां सदात्यानन्ददायिनीम्। श्रीं दैत्यशमनीं शक्तिं मालिनीं शत्रुमर्द्दिनीम्।।२।। तेजःप्रकाशिनीं देवीं वरदां शुभकारिणीम्। ब्राह्मीं च वैष्णीं रोद्रीं कालिकारूपशोभिनीम्।।३।। अकारे लक्ष्मीरूपं तु उकारे विष्णुमव्ययम्। (ध्यायेदितिशेषः।) मकारः पुरुषोऽव्यक्तो देवी प्रणव उच्यते।।४।। सूर्यकोटिप्रतीकाशं चन्द्रकोटिसमप्रभम्। तन्मध्ये निकरं सूक्ष्मं ब्रह्मरूपं व्यवस्थितम्।।५।। ॐकारं परमानन्दं सदैव सुखसुन्दरीम्। सिद्धलक्ष्मि मोक्षलक्ष्मि आद्यलक्ष्मि नमोऽस्तु ते।।६।। सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सवार्थसाधिके। शरण्ये त्र्यंबके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते। प्रथमं त्र्यंबका गौरी द्वितीयं वैष्णवी तथा।।७।। तृतीयं कमला प्रोक्ता चतुर्थं सुन्दरी तथा। पञ्चमं विष्णुशक्तिश्च षष्ठं कात्यायनी तथा।।८।। वाराहीसप्तमं चैव ह्यष्टमं हरिवल्लभा। नवमं खड्गिनी प्रोक्ता दशमं चैव देविका।।९।। एकादशं सिद्धलक्ष्मीर्द्वादशं हंसवाहिनी।

एतत्स्तोत्रवरं देव्या ये पठन्ति सदा नराः।।१०।। सर्वापद्भ्यो विमुच्यन्ते नात्र कार्या विचारणा। एकमासं द्विमासं च त्रिमासं च चतुस्तथा।।११।। पञ्चमासं च षण्मासं त्रिकालं यः सदा पठेत्। ब्राह्मणः क्लेशितो दुःखी दारिद्र्यामय पीडितः।।१२।। जन्मान्तरसहस्रोत्थैर्मुच्यते सर्वकिल्बिषैः। दरिद्रो लभते लक्ष्मीमपुत्रः पुत्रवान्भवेत्।।१३।। धन्यो यशस्वी शत्रुघ्नो वह्निचौरभयेषु च। शाकिनीभूतवेतालसर्पव्याघ्रनिपातने।।१४।। राजद्वारे सभास्थाने कारागृहनिबन्धने। ईश्वरेण कृतं स्तोत्रं प्राणिनां हितकारकम्।।१५।। स्तुवन्तु ब्राह्मणा नित्यं दारिद्र्यं न च बाधते। सर्वपापहरा लक्ष्मीः सर्वसिद्धिप्रदायिनी।।१६।।

जो मनुष्य देवी के इस स्तोत्र को सदा पढ़ते हैं वे सभी आपत्तियों से मुक्त हो जाते हैं। इसमें विचार नहीं करना चाहिये। एक महीना, दो महीना, तीन महीना, चार महीना, पाँच महीना या छः महीना तीनों सन्ध्याओं में जो सदा इस स्तोत्र को पढ़ता है, वह ब्राह्मण यदि दुःखी हो, दरिद्र हो या रोगी हो तो सभी हजारों जन्मों के पापों से मुक्त हो जाता है। दरिद्र लक्ष्मी को प्रापत करता है और पुत्ररहित पुत्रवान् हो जाता है। अग्नि और चोर का भय उपस्थित होने पर, शाकिनी, डाकिनी, भूत, बेताल, सर्प और व्याघ्र आदि जानवरों का आक्रमण होने पर, राजा के दरबार में, सभास्थल में, कारागृह में वह मनुष्य धन्य, यशस्वी और शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला होता है। प्राणियों का हितकारक यह स्तोत्र ईश्वर द्वारा बनाया गया है। ब्राह्मण नित्य इसका पाठ करे तो दारिद्र्य की बाधा नहीं होगी। लक्ष्मी देवी सभी पापों का हरण करनेवाली और सब सिद्धियों को देने वाली हैं।

इति श्रीब्रह्मपुराणे ईश्वरविष्णुसम्वादे श्रीसिद्धलक्ष्मी
मन्त्रस्तोत्रविधानं समाप्तम्।

अथ ज्येष्ठालक्ष्मीमन्त्रप्रयोगः।

मन्त्रमहोदधि में धन की वृद्धि करनेवाला ज्येष्ठालक्ष्मी महामन्त्र इस प्रकार बताया गया है :

ऐं ह्रीं श्रीं ज्येष्ठालक्ष्मि स्वयंभुवे ह्रीं ज्येष्ठायै नमः।

यह सप्तदशाक्षर मन्त्र है।

अस्य विधानम्।

विनियोग : अस्य ज्येष्ठालक्ष्मीमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः अष्टिश्छन्दः ज्येष्ठालक्ष्मीर्देवता ह्रीं बीजं श्रीं शक्तिः ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : ॐ ब्रह्मऋषये नमः शिरसि १। अष्टिश्छन्दसे नमो मुखे २। ज्येष्ठालक्ष्मीदेवतायै नमः हृदि ३। ह्रीं बीजाय नमः लिङ्गे ४। श्रीं शक्तये नमः पादयोः ५। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गेषु ६। इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास : ऐं ह्रीं श्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः १। ज्येष्ठालक्ष्मि तर्जनीभ्यां नमः २। स्वयंभुवे मध्यमाभ्यां नमः ३। ह्रीं अनामिकाभ्यां नमः ४। ज्येष्ठायै कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। नमः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६। इति करन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ऐं ह्रीं श्रीं हृदयाय नमः १। ज्येष्ठालक्ष्मि शिरसे स्वाहा २। स्वयंभुवे शिखायै वषट् ३। ह्रीं कवचाय हुम् ४। ज्येष्ठायै नेत्रत्रयाय वौषट् ५। नमः अस्त्राय फट् ६। इति हृदयादिषडङ्गन्यासः।

मन्त्रवर्णन्यास : ॐ ऐं नमः शिरसि १। ॐ ह्रीं नमो भ्रूमध्ये २। ॐ श्रीं नमो मुखे ३। ॐ जेष्ठालक्ष्म्यै नमः हृदि ४। ॐ स्वयम्भुवे नमः नाभौ ५। ॐ ह्रीं नमः आधारे ६। ॐ ज्येष्ठायै नमः जानुनि ७। ॐ नमो नमः पादयोः ८। इति मन्त्रवर्णन्यासः।

इस प्रकार न्यास करके ध्यान करें।

अथ ध्यानम् : ॐ उद्यद्भास्करसन्निभा स्मितमुखी रक्ताम्बरालेपना सत्कुम्भं धनभाजनं सृणिमथो पाशं करैर्बिभ्रती पद्मस्था कमलेक्षणा दृढ़कुचा सौंदर्यवारान्नि–धिर्ध्यातव्या सकलाभिलाषफलदा श्रीज्येष्ठलक्ष्मीरियम्।।१।। इति ध्यायेत्।

ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमण्डले मण्डूकादिपरतत्त्वान्तपीठदेवताः संस्थाप्य ॐ मं मण्डूकादिपरतत्त्वान्त पीठदेवताभ्यो नमः। इति पीठदेवताः सम्पूज्य नवपीठशक्तीः पूजयेत्।

इसके बाद पीठादि पर रचित सर्वतोभद्रमण्डल में मण्डूकादि परतत्वान्त पीठदेवताओं को स्थापित करके "ॐ मं मण्डूकादि परतत्वान्त पीठदेवताभ्यो नमः" इससे पीठदेवताओं की पूजा करके नव पीठशक्तियों की इस प्रकार पूजा करें:

पूर्वाद्यष्टदिक्षु ॐ लोहिताक्ष्यै नमः १। ॐ विरूपायै नमः २। ॐ करालयै नमः ३। ॐ नीललोहितायै नमः ४। ॐ समदायै नमः ५। ॐ वारुण्यै नमः ६। ॐ पुष्ट्यै नमः ७। ॐ अमोघायै नमः ८। मध्ये ॐ विश्वमोहिन्यै नमः ९।

इति पीठशक्तीः पूजयेत्। ततः स्वर्णादिनिर्मितं यन्त्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण सम्प्रोक्ष्य ॐ रक्तज्येष्ठायै विद्महे नीलज्येष्ठायै धीमहि। तन्नो लक्ष्मि प्रचोदयात्। इति गायत्रीमन्त्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य पाद्यादिपुष्पान्तैरुपचारैः सम्पूज्य देवयाज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात्।

इस प्रकार नव पीठशक्तियों की पूजा करने के बाद स्वर्णादि से निर्मित यन्त्र या मूर्ति को ताम्रपात्र में रख कर घी से उसका अभ्यङ्ग करके उस पर दुग्धधारा और जलधारा डालकर

स्वच्छ वस्त्र से उसे पोंछकर "ॐ रक्तज्येष्ठायै विद्महे नील ज्येष्ठायै धीमहि। तन्नो लक्ष्मि प्रचोदयात्।" इस गायत्री मन्त्र से पुष्पाद्यासन देकर पीठ के मध्य में स्थापित करके प्राणप्रतिष्ठा करके, मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके पाद्यादिपुष्पान्त उपचारों से पूजन कर देवी की आज्ञा लेकर इस प्रकार आवरण पूजा करें :

पुष्पाञ्जलिमादाय मूलमुच्चार्य ॐ संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये। अनुज्ञां देहि ज्येष्ठायै परिवारर्चनाय मे।।१।। इति पठित्वा पुष्पाञ्जलिं दद्यात्। इत्याज्ञां गृहीत्वा षट्कोणकेसरेषु आग्नेयादिचतुर्षु दिक्षु मध्येदिक्षु च।

पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके "ॐ संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये। अनुज्ञां देहि ज्येष्ठायै परिवारर्चनाय मे।।१।।" इसे पढ़कर पुष्पाञ्जलि दें। इस प्रकार आज्ञा लेकर षट्कोण केसरों में आग्नेयादि चारों दिशाओं में और मध्य दिशा में (ज्येष्ठालक्ष्मी मन्त्र पूजन यन्त्र देखिये चित्र २६)

ऐं ह्रीं श्रीं हृदयाय नमः[1]। हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः १। इति सर्वत्र। ज्येष्ठालक्ष्मि शिरसे स्वाहा[2]। शिरःश्रीपा० २। स्वयंभुवे शिखायै वषट्[3]। शिखाश्रीपा० ३। ह्रीं कवचाय हुम्[4]। कवचश्रीपा० ४। ज्येष्ठायै नेत्रत्रयाय वौषट्[5]। नेत्रत्रयश्रीपा० ५। नमः अस्त्राय फट्[6]। अस्त्रा श्रीपा० ६।

इति षडङ्गानि पूजयेत् ततः पुष्पाञ्जलिमादाय मूलमुच्चायै अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्।।१।। इति पठित्वा पुष्पाञ्जलि च दत्वा पूजितास्तर्पिताः सन्तु इति वदेत्। इति प्रथमावरणम्।।१।।

इससे षडङ्गों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके "अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्।।१।।" यह पढ़कर पुष्पाञ्जलि देकर "पूजितास्तर्पिताः सन्तु" यह कहें। इति प्रथमावरण।।१।।

ततोष्टदलेषु पूज्यपूजकयोरन्तरालं प्राची। तदनुसारेण अन्याः दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण।

इसके बाद पूज्य और पूजक के अन्तराल को प्राची दिशा मानते हुये तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके प्राची क्रम से :

ॐ ब्राह्मयै नमः[7] ब्राह्मीश्रीपा० १। ॐ माहेश्वर्यै नमः[8]। माहेश्वरी श्रीपा० २। ॐ कौमार्यै नमः[9]। कौमारीश्रीपा० ३। ॐ वैष्णवै नमः[10]। वैष्णवश्रीपा० ४। ॐ वाराह्यै नमः[11]। वाराही श्रीपा० ५। ॐ इन्द्राण्यै नमः[12]। इन्द्राणीश्रीपा० ६। ॐ चामुण्डायै नमः[13]। चामुण्डाश्रीपा० ७। ॐ महालक्ष्म्यै नमः[14]। महालक्ष्मीश्रीपा० ८।

इत्यष्टौ मातरः सम्पूज्य पुष्पाञ्जलिं दद्यात्। इति द्वितीयावरणम्।।२।।

इससे अष्टमाताओं की पूजा करके पुष्पाञ्जलि दें। इति द्वितीयावरण।।२।।

ततोभूपुरे पूर्वादिक्रमेणेन्द्रादिदिक्पालान् वज्राद्यायुधानि च सम्पूज्य पुष्पांजलिं दद्यात्।

इसके बाद भूपुर में पूर्वादिक्रम से इन्द्रादि दिक्पालों और वज्रादि उनके आयुधों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि दें।

इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारान्तं सम्पूज्य जपं कुर्यात्। अस्य पुरश्चरणं लक्षजपः। आज्यात्तमिश्रितपायसेन दशांशतो होमः। तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्यात्। एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति। एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत्।

इस प्रकार आवरण पूजा करके धूपदान से लेकर नमस्कारान्त उपचारों से पूजा करके जप करें। इसका पुरश्चरण एक लाख जप है। घी से युक्त खीर से दशांश होम करें तथा तत्तद्दशांश

तर्पण, मार्जन और ब्राह्मण भोजन करें। इस प्रकार करने से मन्त्र सिद्ध होता है। मन्त्र के सिद्ध होने पर साधक प्रयोगों को सिद्ध करें।

लक्षं जपेत्पायसेन जुहुयात्तद्दशांशतः। आज्यात्तेन यजेत्पीठे वक्ष्यमाणे महाश्रियम्।।१।। इत्थं जपादिभिः सिद्धो मनुर्दद्यादभीप्सितम्।

एक लाख जप करके उसका दशांश घी मिश्रित खीर से होम करें और वक्ष्यमाण पीठ पर महालक्ष्मी का पूजन करें। इस प्रकार जपादि से सिद्ध मन्त्र अभीप्सित फल देता है।

इति सप्तदशाक्षरज्येष्ठालक्ष्मीमन्त्रप्रयोगः।

अथ वसुधालक्ष्मीमन्त्रप्रयोगः।

मन्त्रो यथा : ॐ ग्लौं श्रीं अन्नं मह्यन्नं मे देह्यन्नाधिपतये ममान्नं प्रदापय स्वाहा श्रीं ग्लौं ॐ। यह अट्ठाइस अक्षरों का मन्त्र है।

अस्य विधानम् :

विनियोग : अस्य वसुधासंज्ञकज्येष्ठालक्ष्मीमन्त्रस्य ब्रह्मऋषिः निचृद्गायत्रीच्छन्दः वसुधादेवता ग्लौ बीजं श्रीं शक्तिः ममाभीष्टप्राप्त्यै जपे विनियोगः

ऋष्यादिन्यास : ॐ ब्रह्मऋषये नमः शिरसि १। निचृद्गायत्रीच्छन्दसे नमो मुखे २। वसुधाश्रीदेवतायै नमो हृदि ३। ग्लौं बीजाय नमो लिङ्गे ४। श्रीं शक्तये नमः पादयोः ५। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गेषु ६। इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास : ॐ अन्नं महि ग्लां श्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः १। ॐ अन्नं में देहि ग्लीं श्रीं तर्जनीभ्यां नमः २। ॐ अन्नाधिपतये ग्लूं श्रीं मध्यमाभ्यां नमः ३। ॐ ममान्नं प्रदापय ग्लौं श्रीं अनामिकाभ्यां नमः ४। ॐ स्वाहा ग्लौं श्रीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। इति करन्यासः।

पञ्चाङ्गन्यास : ॐ अन्नं महि ग्लां श्रीं हृदयाय नमः १। ॐ अन्नं मे देहि ग्लीं श्रीं शिरसे स्वाहा २। ॐ अन्नाधिपतये ग्लूं श्रीं शिखायै वषट् ३। ॐ ममान्नं प्रदापय ग्लैं श्रीं कवचाय हुम् ४। ॐ स्वाहा ग्लौं श्रीं अस्त्राय फट् ५। इति पञ्चाङ्गन्यासः।

इस प्रकार न्यास करके स्वर्णदीप में देवी का ध्यान करें :

अथ ध्यानम् :

ॐ कल्पद्रुमाधो मणिवेदिकायां समास्थिते वस्त्रविभूषणाढ्ये। भूमिश्रियौ वाञ्छितवामदक्षे सञ्चिन्तयेद्देवमुनीन्द्रवन्द्ये।।१।।

इति ध्यात्वा सर्वतोभद्रमण्डले मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठदेवताः संस्थाप्य ॐ मं मण्डूकादिपरतत्त्वान्तपीठदेवताभ्यो नमः। इति सम्पूज्य नवपीठशक्तीः पूजयेत्।

इससे ध्यान करके सर्वतोभद्रमण्डल में मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठदेवताओं को स्थापित करके "ॐ मं मण्डूकादिपरतत्त्वान्तपीठदेवताभ्यो नमः।"इससे पीठ देवताओं की पूजा करके नव पीठ शक्तियों की इस प्रकार पूजा करें :

पूर्वाद्यष्टसु दिक्षु ॐ विमलायै नमः १। ॐ मुत्कर्षिण्यै नमः २। ॐ ज्ञानायै नमः ३। ॐ क्रियायै नमः ४। ॐ योगायै नमः ५। ॐ प्रह्वयै नमः ६। ॐ सत्यायै नमः ७। ॐ ईशानायै नमः ८। मध्ये ॐ अनुग्रहायै नमः ६।

इति पीठशक्तीः पूजयेत्। ततः स्वर्णादिनिर्मितं यन्त्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेण प्रोक्ष्य ॐ नमो भगवते विष्णवे सर्वभूतात्मसंयोगपद्मपीठात्मने नमः। इति मन्त्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये

संस्थाप्य प्रतिष्ठां च कृत्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य पाद्यादिपुष्पान्तैरुपचारैः सम्पूज्य देव्याज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात्।

इन मन्त्रों से पीठशक्तियों की पूजा करने के बाद स्वर्णादि से बने यन्त्र या मूर्ति को ताम्रपात्र में रखकर घी से उसका अभ्यङ्ग करके उसके ऊपर दूध और जल की धारा देकर स्वच्छ वस्त्र से उसे पोंछ कर "ॐ नमो भगवते विष्णवे सर्वभूतात्मसंयोगपद्मपीठात्मने नमः।" इस मन्त्र से पुष्प और पाद्य का आसन देकर पीठ के मध्य उसे स्थापित करके उसमें प्राणप्रतिष्ठा करके मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके पाद्यादि से पुष्पाञ्जलिदान पर्यन्त उपचारों से पूजा करके दे५। की आज्ञा लेकर इस आवरण पूजा करें (वसुधालक्ष्मी पूजन यन्त्र देखिये चित्र ३०)।

पुष्पाञ्जलिमादाय ॐ संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये। अनुज्ञां देहि वसुधे परिवारार्चनाय मे।।१।। इति पठित्वा पुष्पाञ्जलि दद्यात्। इत्याज्ञां गृहीत्वा षट्कोणकेसरेषु आग्नेयादिचतुर्दिक्षु मध्येदिक्षु च।

पुष्पाञ्जलि लेकर "ॐ संविन्मये परे देवि परामृत रसप्रिये। अनुज्ञां देहि वसुधे परिवारार्चनाय मे।।१।।" इस पढ़कर पुष्पाञ्जलि दें। इस प्रकार आज्ञा लेकर षट्कोण केसरों में आग्नेयादि चारों दिशाओं और मध्य दिशा में :

ॐ अन्नं महि ग्लां श्रीं हृदयाय नमः[1]। हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः१। इति सर्वत्र। ॐ अन्नं मे देहि ग्लीं श्रीं शिरसे स्वाहा[2]। शिरः श्रीपा० २। ॐ अन्नाधिपतये ग्लूँ श्रीं शिखायै वषट्[3]। शिखाश्रीपा० ३। ॐ ममान्नं प्रदापय ग्लैं श्रीं कवचाय हुम्[4]। कवचश्रीपा० ४। ॐ स्वाहा ग्लौं श्रीं अस्त्राय फट्[5]। अस्त्रश्रीपा० ५।

इति पञ्चाङ्गानि पूजयेत्। ततः पुष्पाञ्जलिमादाय मूलमुच्चार्य : अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्।।१।। इति पठित्वा पुष्पाञ्जलि च दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः सन्तु इति वदेत्। इति प्रथमावरणम्।।१।।

इससे पञ्चाङ्गों का पूजन करें। इसके बाद पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके "अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्।।१।।" इसे पढ़कर पुष्पाञ्जलि देकर "पूजितास्तर्पिताः सन्तु" यह कहें। इति प्रथमावरण।।१।।

ततः पूज्यपूजकयोरन्तरालं प्राची। तदुसारेण अन्याः दिशः प्रकल्प्य प्राची क्रमेणाष्टदलेषु चतुर्दिक्षु।

इसके बाद पूज्य और पूजक के अन्तराल को प्राची दिशा मानकर तथा तदनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके प्राची क्रम से अष्टदलों में चारों दिशाओं में :

ॐ पृथिव्यै नमः[6]। पृथ्वीश्रीपा० १। ॐ अग्नये नमः[7]। अग्निश्रीपा० २। ॐ जलाय नमः[8]। जलश्रीपा० ३। ॐ मारुताय नमः[9]। मारुतश्रीपा० ४। आग्नेययादिविदिक्षु च ॐ निवृत्त्यै नमः[10]। निवृत्तिश्रीपा० ५। ॐ प्रतिष्ठायै नमः[11]। प्रतिष्ठाश्रीपा० ६। ॐ विद्यायै नमः[12]। विद्याश्रीपा० ७। ॐ शान्त्यै नमः[13]। शान्तिश्रीपा० ८।

इससे आठों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि दें। इति द्वितीयावरण।।२।।

इसके बाद अष्टदलाग्रों में प्राची क्रम से :

ॐ बलाकायै नमः[14]। बलाकाश्रीपा० १। ॐ विमलायै नमः[15]। विमलाश्रीपा० २। ॐ कमलायै नमः[16]। कमलाश्रीपा० ३। ॐ वनमालायै नमः[17]। वनमालाश्रीपा० ४। ॐ विभीषायै नमः[18]। विभीषाश्रीपा० ५। ॐ मालिकायै नमः[19]। मालिकाश्रीपा० ६। ॐ शाङ्ख्यै नमः[20]। शाङ्खरीश्रीपा० ७। ॐ वसुमालिकायै नमः[21]। वसकुमालिकाश्रीपा० ८।

इससे अष्टशक्तियों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि दें। इति तृतीयावरण।।३।।

ततो भूपूरे पूर्वादिक्रमेण इन्द्रादिदशदिक्पालान्[२३-३२] वज्राद्यायुधानि[३३-४२] च सम्पूज्य जपं कुर्यात्। अस्य पुरश्चरणं लक्षजपः। घृतान्नेन दशांशतो होमः। तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनानि कुर्यात्। एवं कृते मन्त्रः सिद्धो भवति। एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री प्रयोगान् साधयेत्।

इसके बाद भूपुर में पूर्वादि क्रम से इन्द्रादि दश दिक्पालों की तथा वज्र आदि उनके आयुधों की पूजा करके जप करें। इसका पुरश्चरण एक लाख जप है। जप का दशांश घी से सिक्त अन्न का होम है। होम से दशांश तर्पण और तत्तद्दशांश मार्जन तथा ब्राह्मणभोजन करें। ऐसा करने से मन्त्र सिद्ध होता है। इस मन्त्र के सिद्ध होने पर साधक प्रयोगों को सिद्ध करें।

लक्षमेकं तपेन्मन्त्रं तद्दशांशं धृताप्लुतैः। अन्नैर्हुत्त्वा यजेत्पीठे वैष्णवे वसुधाश्रियौ।।१।। इत्थं सपरिवारे यो धरालक्ष्म्यौ जपादिभिः। आराधयेत्स लभते महतीमन्नसम्पदम्।।२।। आज्याक्तैश्च तिलैर्बिल्वसमिद्भिर्जुहुयाच्छिये। साज्येन पायसेनापि फलैः पत्रैश्च बिल्वजैः।।३।। जपतामुं महामन्त्रं होमः कार्यो दिनेदिने। दशसंख्यैः कुबेरस्य मनुनेध्मैर्वटोद्भवैः।।४।। होम काले कुबेरं तु चिन्तयेदग्निमध्यगम्।

एक लाख मन्त्रों का जप करें। जप का दशांश घृत से सिक्त अन्न से होम करके वैष्णव पीठ पर वसुधालक्ष्मी का पूजन करें। इस प्रकार सपरिवार जो जप आदि से वसुधालक्ष्मी का पूजन करता है वह महती अन्न सम्पदा प्राप्त करता है। घृत से सिक्त तिलों और बेल की समिधाओं से लक्ष्मी के लिए होम करना चाहिये। इस मन्त्र का जप करने वालों को प्रतिदिन घी सहित खीर, बेल के पत्रों तथा फलों से होम करना चाहिये। कुबेर के मन्त्र (ॐ वैश्रवणाय स्वाहा) से बरगद की समिधाओं द्वारा दश बार होम करें तथा होम के समय अग्नि के मध्य कुबेर का इस प्रकार ध्यान करें।

कुबेर ध्यानं यथा :

धनपूर्णं स्वर्णकुम्भं तथा रत्नकरण्डकम्।।५।। हस्ताभ्यां विप्लुतं खर्वकरपादं च तुन्दिलम्। वटाधस्ताद्रत्नपीठोपविष्टं सुस्मिताननम्। एवं कृतहुतो मन्त्री लक्ष्म्या जयति वित्तपम्।।६।।

इससे कुबेर का ध्यान करें।

इति वसुधालक्ष्म्यष्टाविंशत्यक्षर मन्त्रप्रयोगः।

लक्ष्मीकवच

अथ वक्ष्ये महेशानि कवचं सर्वकामदम्। यस्य विज्ञानमात्रेण भवेत्साक्षात्सदा शिवः।।१।। नार्चनं तस्य देवेशि मन्त्रमात्रं जपेन्नरः। स भवेत्पार्वतीपुत्रः सर्वशास्त्रपुरस्कृतः।।२।। विद्यार्थिनां सदा सेव्या धन दात्री विशेषतः। धनार्थिभिस्सदा सेव्या कमला विष्णुवल्लभा।।३।।

हे महेशानि ! मैं समस्त कामनाओं को पूर्ण करने वाला कवच तुम्हें बताऊँगा जिसके विज्ञानमात्र से मनुष्य साक्षात् शिव हो जाता है। हे देवेशि ! इसमें अर्चन नहीं है। मनुष्य मन्त्र का जप करे। वह जप के प्रभाव से पार्वतीजी का पुत्र और समस्त शास्त्रों से पुरस्कृत हो जाता है। विद्यार्थियों के लिए यह सदा सेव्य तथा विशेष रूप से धन देने वाला है। धनार्थियों को इन विष्णुवल्लभा कमला देवी की सदा सेवा करनी चाहिये।

विनियोग : अस्याश्चतुरक्षराविष्णुवनितायाः कवचस्य श्रीभगवान् शिव ऋषिरनष्टप्छन्दो वाग्भवा देवता वाग्भवं बीजं लज्जा शक्ती रमा कीलकं कामबीजात्मकं कवचं मम सुकवित्वपाण्डित्यसमृद्धिसिद्धये पाठे विनियोगः।

ऐंकारो मस्तके पातु वाग्भवा सर्वसिद्धिदा। ह्रीं पातु चक्षुषोर्मध्ये चक्षुर्युग्मे च शाङ्करी।।४।। जिह्वायां मुखवृत्ते च कर्णयार्दन्तयोर्नसि। ओष्ठाधारे दन्तपंक्तौ तालुमूले हनौ पुनः।।५।। पातु मां विष्णुवनिता लक्ष्मीः श्रीवर्णरूपिणी। कर्णयुग्मे भुजद्वन्द्वे स्तनद्वन्द्वे च पार्वती।।६।। हृदये मणिबन्धे च ग्रीवायां पार्श्वद्वयोः। पृष्ठदेशे तथा गुह्ये वामे च दक्षिणे तथा।।७।। उपस्थे च नितम्बे च नाभौ जङ्घाद्वये पुनः। जानुचक्रे पदद्वन्द्वे घुटिकेंगुलिमूलके।।८।। स्वधा तु प्राणशक्त्यां वा सीमान्यां मस्तके तथा। सर्वाङ्गे पातु कामेशी महादेवी समुन्नतिः।।९।। पुष्टिः पातु महा माया उत्कृष्टिः सर्वदाऽवतु। ऋद्धिः पातु सदा देवी सर्वत्र शम्भुवल्लभा।।१०।। वाग्भवा सर्वदा पातु पातु मां हरगेहिनी। रमा पातु महादेवी पातु माया स्वराट् स्वयम्।।११।। सवाङ्गे पातु मां लक्ष्मीर्विष्णुमाया सुरेश्वरी। विजया पातु भवने जया पातु सदा मम।।१२।। शिवदूती सदा पातु सुन्दरी पातु सर्वदा। भैरवी पातु सर्वत्र भेरुण्डा सर्वदाऽवतु।।१३।। त्वरिता पातु मां नित्यमुग्रतारा सदाऽवतु। पातु मां कालिका नित्यं कालरात्रिः सदाऽवतु।।१४।। नवदुर्गा सदा पान्तु कामाख्या सर्वदाऽवतु। योगिन्यः सर्वदा पान्तु मुद्राः पान्तु सदा मम।।१५।। मात्राः पान्तु सदा देव्यश्चक्रस्था योगिनीगणाः। सर्वत्र सर्वकार्येषु सर्वकर्मसु सर्वादा।।१६।। पातु मां देवदेवी च लक्ष्मीः सर्वसमृद्धिदा।

इति ते कथितं दिव्यं कवचं सर्वसिद्धये।।१७।। यत्र तत्र न वक्तव्यं यदीच्छेदात्मनो हितम्। शठाय भक्तिहीनाय निन्दकाय महेश्वरि।।१८।। न्यूनाङ्गेह्यतिरिक्ताङ्गे दर्शयेन्न कदाचन। न स्तवं दर्शयेद्दिव्यं दर्शनाच्छिवहा भवेत्।।१९।। कुलीनाय महेशाय दुर्गाभक्तिपराय च। वैष्णवाय विशुद्धाय दद्यात्कवचमुत्तमम्।।२०।। निजशिष्याय शान्ताय धनिने कुलिने तथा। दद्यात्कवचमित्युक्तं सर्वतन्त्रसमन्वितम।।२१।। शनौ मङ्गलवारे च रक्तचन्दनकैस्तथा। यावकेन लिखेन्मन्त्रं सर्वचक्रसमन्वितम्।।२२।। विलिखेत्कवचं दिव्यं स्वयम्भुकुसुमैः शुभैः। स्वशुक्रैः परशुक्रैश्च नानागन्धसमन्वितैः।।२३।। गोरोचनाकुंकुमेन रक्तचन्दनकेन वा। स्रुतिथौ शुभयोगे वा श्रवणायां रवेर्दिने।।२४।। अश्विन्यां कृत्तिकायां वा फाल्गुन्यां वा मघासु च। पूर्वाभाद्रपदायोगे स्वात्यां मङ्गलवासरे।।२५।। विलिखेत्प्रपठेत्स्तोत्रं शुभयोगे सुरालये। आयुष्मत्प्रीतियोगे च ब्रह्मयोगे विशेषतः।।२६।। इन्द्रयोगे शुभे योगे शुक्लयोगे तथैव च। कौलवे बालवे चैव वणिजे चैव सत्तमः।।२७।। शून्यागारे श्मशाने वा विजने च विशेषतः। कुमारीं पूजयित्वा च यजेद्देवीं सनातनीम्।।२८।। मत्स्यैर्मांसैः शाकमूलैः पूजयेत्परदेवताम्। घृताद्यैः सोमकरणैः पुष्पधूपैर्विशेषतः।।२९।। ब्राह्मणान्भोजयित्वा च पूजयेत्परमेश्वरीम्। आखेटकमुपाख्यानं तत्र कुर्याद्दिनत्रयम्।।३०।। तदा कुर्यान्महारक्षां शङ्करेण प्रभाषिताम् मारणद्वेषणादीनि लभते नात्र संशयः। स भवेत्पार्वतीपुत्रः सर्वशास्त्रपुरस्कृतः।।३१।। गुरुर्देवो हरः साक्षात्पत्नी तस्य हरप्रिया। अभेदेन यजेद्यस्तु तस्य सिद्धिरदूरतः।।३२।।

हे महेश्वरि ! यह दिव्य कवच सब सिद्धियों के लिए मैनें तुम्हें बताया है। यदि साधक अपना कल्याण चाहे तो जहाँ कहीं इसे न बतायें। शैठ, भक्तिहीन, निन्दक, न्यून अङ्ग वालों और अधिक अङ्ग वालों को इसे कभी नहीं दिखाना चाहिये। स्तोत्र को किसी को नहीं दिखाना चाहिये क्योंकि दिखाने से शिव का घातक हो जाता है। कुलीन और महेश तथा दुर्गा की भक्ति में श्रद्धा रखने वाले विशुद्ध वैष्णव को, शान्त, धनी और कुलीन अपने शिष्य को यह उत्तम सभी तन्त्रों से युक्त कवच देना चाहिये। शनिवार और मङ्गलवार को रक्त चन्दन से या महावर से सभी चक्रों से युक्त दिव्य कवच को स्वयंभूकुसुम, स्ववीर्य, अन्य के वीर्य, अनेक सुगन्धियों से युक्त, गोरोचन, केसर और लाल चन्दन से उत्तम तिथि, शुभ योग अथवा रवि के दिन श्रवणा, अश्विनी, कृत्तिका, फाल्गुनी या मघा, पूर्वभाद्रपदा या स्वाति नक्षत्र में मङ्गलवार को स्वयं लिखें और मन्दिर में शुभ योग में इसका पाठ करें। आयुष्मत्प्रीतियोग में तथा विशेष रूप से ब्रह्म योग में, शुभ शुक्ल योग में, कौलव, बालव या बणिज में, शून्य घर में, श्मशान में अथवा विशेषतः एकान्त स्थान में कुमारी की पूजा करके सनातनी देवी की आराधना करें। मछली, माँस, शाक और मूल से घृत आदि से, विशेष रूप से पुष्प–धूप आदि से इस श्रेष्ठ देवता की पूजा करें। ब्राह्मणों को भोजन कराकर परमेश्वरी की पूजा करें। वहाँ पर तीन दिन तक आखेट (शिकार) की कहानी कहें। उस समय शङ्कर द्वारा कहे गये महारक्षा (कवच) का पाठ करना चाहिये। इससे साधक मारण और द्वेषण की सिद्धि प्राप्त करता है, इसमें संशय नहीं है। वह पार्वतीपुत्र और सभी शास्त्रों का ज्ञाता हो जाता है। शिवजी साक्षात् गुरु हैं, पत्नी साक्षात् हरप्रिया है। जो अभेद बुद्धि से पूजा करता है, सिद्धि उसके पास उपस्थित हो जाती है।

पठति य इह मर्त्यो नित्यमार्द्रान्तरात्मा जपफलमनुमेवं लक्ष्यते सद्विशेषम्। स भवति पदमुच्चैः सम्पदां पादनम्रक्षितिपमुकुटलक्ष्मीलक्षणानां चिराय।।३३।।

इस संसार में जो मनुष्य गद्गद अन्तरात्मा से इस प्रकार के जप फलों को देने वाले मन्त्र को इस दृष्टि से देखता है, उसके चरणों को राजाओं के मुकुटों की लक्ष्मी बहुत दिनों तक चूमने लगती हैं।

इति विश्वसारतन्त्रे लक्ष्मीकवचं समाप्तम्।

लक्ष्मीस्तोत्रम्

त्रैलोक्यपूजिते देवि कमले विष्णुवल्लभे। यथा त्वमचला कृष्णे तथा भव मयि स्थिरा।।१।। कमला चञ्चला लक्ष्मीश्चला भूतिर्हरिप्रिया। पद्मा पद्मालया सम्यगुच्चैः श्रीपद्म–धारिणी।।२।। द्वादशैतानि नामानि लक्ष्मीं सम्पूज्य यः पठेत्। स्थिरा लक्ष्मीर्भवेत्तस्य पुत्रदारादिभिः सह।।३।।

इति विश्वसारतन्त्रे लक्ष्मीस्तोत्रं समाप्तम्।

कमलाया अष्टोत्तरशतनामस्तोत्र

श्रीशिव उवाच। शतमष्टोत्तरं नाम्नां कमलाया वरानने। प्रवक्ष्याम्यतिगुह्यं हि न कदापि प्रकाशयेत्।।१।।

श्री शिवजी बोले : हे वरानने ! कमला के एक सौ आठ नाम मैं तुम्हें बताऊँगा जो अत्यन्त गोपनीय हैं। इसे कभी भी प्रकाशित नहीं करना चाहिये।

महामाया महालक्ष्मीर्महावाणी महेश्वरी। महादेवी महारात्रिर्महिषासुरमर्दिनी।।२।। कालरात्रिः कुहूः पूर्णा नन्दाऽद्या भद्रिका निशा। जया रिक्ता महाशक्तिर्देवमाता कृशोदरी।।३।। शचीन्द्राणी शक्रनुता शङ्करप्रियवल्लभा। महावराहजननी मदनोन्मथिनी मही।।४।। वैकुण्ठनाथरमणी विष्णुवक्षस्थलस्थिता। विश्वेश्वरी विश्वमाता वरदाऽभयदा शिवा।।५।। शूलिनी चक्रिणी मा च पाशिनी शङ्खधारिणी। गदिनी मुण्डमाला च कमला करुणालया।।६।। पद्माक्षधारिणी ह्यम्बा महाविष्णु प्रियङ्करी। गोलोकनाथरमणी गोलोकेश्वरपूजिता।।७।। गया गङ्गा च यमुना गोमती गरुडासना। गण्डकी सरयूस्तापी रेवा चैव पयस्विनी।।८।। नर्मदा चैव कावेरी केदारस्थलवासिनी। किशोरी केशवनुता महेन्द्रपरिवन्दिता।।९।। ब्रह्मादिदेवनिर्माणकारिणी देवपूजिता। कोटिब्रह्माण्डमध्यस्था कोटिब्रह्माण्डकारिणी।।१०।। श्रुतिरूपा श्रुतिकरी श्रुतिस्मृतिपरायणा। इन्दिरा सिन्धुतनया मातङ्गी लोकमातृका।।११।। त्रिलोकजननी तन्त्रा तन्त्रमन्त्रस्वरूपिणी। तरुणी च तमोहन्त्री मङ्गला मङ्गलायना।।१२।। मधुकैटभमथिनी शुम्भासुरविनाशिनी। निशुम्भादिहरा माता हरिशङ्करपूजिता।।१३।। सर्वदेवमयी सर्वा शरणागतपालिनी। शरण्या शम्भुवनिता सिन्धुतीरनिवासिनी।।१४।। गन्धर्वगानरसिका गीता गोविन्दवल्लभा। त्रैलोक्यपालिनी तत्त्वरूपा तारुण्यपूरिता।।१५।। चन्द्रावली चन्द्रमुखी चन्द्रिका चन्द्रपूजिता। चन्द्राशशाङ्कभगिनी गीतवाद्यपरायणा।।१६।। सृष्टिरूपा सृष्टिकरी सृष्टिसंहारकारिणी।

इति ते कथितं देवि रमानामशताष्टकम्।।१७।। त्रिसन्ध्यं प्रयतो भूत्वा पठेदेतत्समाहितः। यंयं कामयते कामं तंतं प्राप्नोत्यसंशयम्।।१८।।

हे देवि! मैने ये रमा के एक सौ आठ नाम तुम्हें बता दिये हैं। जो प्रातः, मध्याह्न तथा सायंकाल शान्त चित्त होकर इस स्तोत्र को पढता है वह जो-जो इच्छा करता है वह सब प्राप्त करता है।

इमं स्तवं यः पठतीह मर्त्यो वैकुण्ठपत्न्याः परमादरेण। धनाधिपाद्यैः परिवन्दितः स्यात् प्रयास्यति श्रीपदमन्तकाले।।१९।।

जो मनुष्य वैकुण्ठपत्नी के इस स्तोत्र को अत्यन्त आदर के साथ पढता है, वह राजाओं से वन्दित होकर मृत्यु के बाद विष्णुधाम को प्राप्त होता है।

इति कमलाया अष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्।

लक्ष्मीसहस्रनामस्तोत्र

ॐ तामाह्वयामि सुभगां लक्ष्मीं त्रैलोक्यपूजिताम्। ऐह्येहि देवि पद्माक्षि पद्माकरकृतालये।।१।। आगच्छागच्छ वरदे पश्य मां स्वेन चक्षुषा। आयाह्यायाहि धर्मार्थ-काममोक्षमये शुभे।।२।। एवंविधैः स्तुतिपदैः सत्यैस्सत्यार्थसंस्तुता। कनीयसी महाभागा चन्द्रेण परमात्मना।।३।। निशाकरश्च सा देवी भ्रातरौ द्वौ पयोनिधेः। उत्पन्नमात्रौ तावास्तां शिवकेशवसंश्रितौ।।४।। सनत्कुमारस्तमृषिं समाभाष्य पुरातनम्। प्रोक्तवानितिहासं तु लक्ष्म्याः स्तोत्रमनुत्तमम्।।५।। अथेदृशान्महाघोराद्दारिद्र्यान्नरकात्कथम्। मुक्तिर्भवति लोकेऽस्मिन् दारिद्र्यं याति भस्मताम्।।६।। सनत्कुमार उवाच। पूर्वं कृतयुगे ब्रह्मा भगवान् सर्वलोककृत्। सृष्टिं नानाविधां कृत्वा पश्चाच्चिन्तामुपेयिवान्।।७।। किमाहाराः प्रजास्त्वेताः सम्भविष्यन्ति भूतले। तथैव चासान्दारिद्र्यात्कथमुत्तरणं भवेत्।।८।। दारिद्र्यान्मरणं

श्रेयस्त्विति सञ्चिन्त्य चेतसि। क्षीरोदस्योत्तरे कूले जगाम कमलोद्भवः।।६।। तत्र तीव्रं तपस्तप्त्वा कदाचित्परमेश्वरम्। ददर्श पुण्डरीकाक्षं वासदेवं जगद्गुरुम्।।१०।। सर्वज्ञं सर्वशक्तीनां सर्वावासं सनातनम् सर्वेश्वरं वासुदेवं विष्णुं लक्ष्मीपतिं प्रभुम्।।११।। सोमकोटिप्रतीकाशं क्षीरोदविमले जले। अनन्तभोगशयनं विश्रान्तं श्रीनिकेतनम्।।१२।। कोटिसूर्यप्रतीकाशं महायोगेश्वरेश्वरम्। योगनिद्रारतं श्रीशं सर्वावासं सुरेश्वरम्।।१३।। जगदुत्पत्तिसंहारस्थितिकारणकारणम्। लक्ष्म्यादिशक्तिकरणं जातमण्डलमण्डितम्।।१४।। आयुधैर्हैहवद्भिश्च चक्राद्यैः परिवारितम्। दुर्निरीक्ष्यं सुरैः सिद्धैर्महायोनिशतैरपि।।१५।। आधारं सर्वशक्तीनां परं तेजः सुदुस्सहम्। प्रबुद्धं देवमीशानं दृष्ट्वा कमलसम्भवः।।१६।। शिरस्यअलिमाधाय स्तोत्रं पूर्वमुवाच ह। मनोवांछितसिद्धिं त्वं पुरयस्व महेश्वर।।१७।। जितं ते पुण्डरीकाक्ष नमस्ते विश्वभावन। नमस्तेऽस्तु हृषीकेश महापुरुषपूर्वज।।१८।। सर्वेश्वर जयानन्द सर्वावास परात्पर। प्रसीद मम भक्तस्य छिंधि सन्देहजं तमः।।१९।। एवंस्तुतः स भगवान् ब्राह्मणाऽव्यक्तजन्मना। प्रसादाभिमुखः प्राह हरिर्विश्रान्तलोचनः।।२०।। श्रीभगवानुवाच। हिरण्यगर्भ तुष्टोऽस्मि ब्रूहि यत्तेऽभिवांछितम्। तद्वक्ष्यामि न सन्देहो भक्तोसि मम सुव्रत।।२१।। केशवाद्वचनं श्रुत्वा करुणाविष्टचेतनः। प्रत्युवाच महाबुद्धिर्भगवन्तं जनार्दनम्।।२२।। चतुर्विधं भवस्यास्य भूतसर्गस्य केशव। परित्राणाय मे ब्रूहि रहस्यं परमाद्भुतम्।।२३।। दारिद्र्यशमनं धन्यं मनोज्ञं पावनं परम्। सर्वेश्वर महाबुद्धे स्वरूपं भैरवं महत्।।२४।। श्रियः सर्वातिशायिन्यास्तथा ज्ञानं च शाश्वतम्। नामानि चैव मुख्यानि यानि गौणानि चाच्युत।।२५।। त्वद्वक्त्रकमलोत्थानि श्रोतुमिच्छामि तत्त्वतः। इति तस्य वचः श्रुत्वा प्रतिवाक्यमुवाच सः।।२६।। श्रीभगवानुवाच। महाविभूतिसंयुक्ता षाड्गुण्यवपुषः प्रभोः। भगवद्वासुदेवस्य नित्यं चैषाऽनपायिनी।।२७।। एकैव वर्त्ततेऽभिन्ना ज्योत्स्नेव हिमदीधितेः। सर्वशक्त्यात्मिका चैव विश्वं व्याप्य व्यवस्थिता।।२८।। सर्वैश्वर्यगुणोपेता नित्यशुद्धस्वरूपिणी। प्राणशक्तिः परा ह्येषा सर्वेषां प्राणिनां भुवि।।२९।। शक्तीनां चैव सर्वासां योनिभूता पर कला। अहं तस्याः परं नाम्नां सहस्रमिदमुत्तमम्।।३०।। शृणुष्वावहितो भूत्वा परमैश्वर्यभूतिदम्। देव्याख्यास्मृतिमात्रेण दारिद्र्यं याति भस्मताम्।।३१।। श्रीः पद्मा प्रकृतिः सत्त्वा शान्ता चिच्छक्तिरव्यया। केवला निष्कला शुद्धा व्यापिनी व्योमविग्रहा।।३२।। व्योमपद्माकृताधारा परा व्योमा मतोद्भवा। निर्व्योमा व्योममध्यस्था पंचव्योमपदाश्रिता।।३३।। अच्युता व्योमनिलया परमानन्दरूपिणी। नित्यशुद्धा नित्यतृप्ता निर्विकारा निरीक्षणा।।३४।। ज्ञानशक्तिः कर्तृशक्तिर्भोक्तृशक्तिः शिखावहा। स्नेहाभासा निरानन्दा विभूतिर्विमला चला।।३५।। अनन्ता वैष्णवी व्यक्ता विश्वानन्दा विकाशिनी। शक्तिर्विभिन्नसर्वार्तिः समुद्रपरितोषिणी।।३६।। मूर्तिः सनातनी हार्दी निस्तरङ्गा निरामया। ज्ञानज्ञेया ज्ञानगम्या ज्ञानज्ञेयविकांसिनी।।३७।। स्वच्छन्दशक्तिर्गहना निष्कम्पाऽर्चिः सुनिर्मला। स्वरूपा सर्वगाऽपारा बृंहिणी सुगुणोर्जिता।।३८।। अकलङ्का निराधारा निस्सङ्कल्पा निराश्रया। असङ्कीर्णा सुशान्ता च शाश्वती भासुरी स्थिरा।।३९।। अनौपम्या निर्विकल्पा निर्यन्त्रा यन्त्रवाहिनी। अभेद्या भेदिनी भिन्ना भारती वैखरी खगा।।४०।। अग्राह्या ग्राहिका गूढ़ा गम्भीरा विश्वगोपिनी। अनिर्देश्याऽप्रतिहता निर्बीजा पावनी

परा।।४१।। अप्रतर्क्याऽपरिमिता भवभ्रान्तिविनाशिनी। एका द्विरूपा त्रिविधा असंख्याता सुरेश्वरी।।४२।। सुप्रतिष्ठा महाधात्री स्थितिर्वृद्धिर्ध्रुवा गतिः। ईश्वरी महिमा ऋद्धिः प्रमोदा उज्ज्वलोद्यमा।।४३।। अक्षया वर्द्धमाना च सुप्रकाशा विहङ्गमा। नीरजा जननी नित्या जया रोचिष्मती शुभा।।४४।। तपोनुदा च ज्वाला च सुदीप्तिश्चांशुमालिनी। अप्रमेया त्रिधा सूक्ष्मा परा निर्माणदायिनी।।४५।। अवदाता सुशुद्धा च अमोघाख्या परम्परा। सन्धानकी शुद्धविद्या सर्वभूतमहेश्वरी।।४६।। लक्ष्मीस्तुष्टिर्महाधीरा शान्तिरापूरणेन वा। अनुग्रहाशक्तिराद्या जगज्ज्येष्ठा जगद्विधिः।।४७।। सत्या प्रह्वा क्रियायोग्या ह्यपर्णाह्लादिनी शिवा। सम्पूर्णाह्लादिनी शुद्धा ज्योतिष्मत्यमतावहा।।४८।। रजोवत्यर्कप्रतिभाऽकर्षिणी कर्षिणी रसा। परा वसुमती देवी कान्तिः शान्तिर्मतिः कला।।४९।। कला कलंकरहिता विशालोद्दीपनी रतिः। सम्बोधिनी हारिणी च प्रभावा भवभूतिदा।।५०। अमृतस्यन्दिनी जीवा जननी खण्डिका स्थिरा। धूमा कलावती पूर्णा भासुरा सुमती रसा।।५१।। शुद्धा ध्वनिः सृतिः सृष्टिर्विकृतिः कृष्टिरेव च। प्रापणी प्राणदा प्रह्वा विश्वा पाण्डुरवासिनी।।५२।। अवनिर्वज्रनलिका चित्रा ब्रह्माण्डवासिनी। अनन्तरूपाऽनन्तात्माऽनन्तस्थाऽनन्तसम्भवा।।५३।। महाशक्तिः प्राणशक्तिः प्राणदात्री रतिम्भरा। महासमूहा निखिला इच्छाधारा सुखावहा।।५४।। प्रत्यक्षलक्ष्मीर्निष्कम्पा प्ररोहाबुद्धि गोचरा। नानादेहा महावर्ता बहुदेहविकासिनी।।५५।। सहस्राणी प्रधाना च न्यायवस्तुप्रकाशिका। सर्वाभिलाषपूर्णेच्छा सर्वा सर्वार्थभाषिणी।।५६।। नानास्वरूपचिद्धात्री शब्दपूर्वा पुरातना। व्यक्ताऽव्यक्ता जीवकेशा सर्वेच्छापरिपूरिता।।५७।। सङ्कल्पसिद्धा सांख्येया तत्त्वगर्भा धरावहा। भूतरूपा चित्स्वरूपा त्रिगुणा गुणगर्विता।।५८।। प्रजापतीश्वरी रौद्री सर्वाधारा सुखावहा कल्याणवाहिका कल्या कलिकल्मषनाशिनी।।५९।। निरूपोद्भिन्नसन्ताना सुयन्त्रा त्रिगुणालया। महामाया योगमाया महायोगेश्वरी प्रिया।।६०।। महास्त्री विमला कीर्तिर्जया लक्ष्मीर्निरञ्जना प्रकृतिर्भगवन्माया शक्तिर्निद्रा। यशस्करी।।६१।। चिन्ता बुद्धिर्यशः प्रज्ञा शान्तिराप्तातिवर्द्धिनी। प्रद्युम्नमाता साध्वी च सुखसौभाग्यसिद्धिदा।।६२।। काष्ठा निष्ठा प्रतिष्ठा च ज्येष्ठा श्रेष्ठा जयावहा। सर्वातिशायिनी प्रीतिर्विश्वशक्तिर्महाबला।।६३।। वरिष्ठा विजया वीरा जयन्ती विजयप्रदा। हृद्गृहा गोपिनी गुह्या गणगन्धर्वसेविता।।६४।। योगीश्वरी योगमाया योगिनी योगसिद्धिदा। महायोगेश्वरवृता योगा योगेश्वरप्रिया।।६५।। ब्रह्मेन्द्ररुद्रनमिता सुरासुरवरप्रदा। त्रिवर्त्मगा त्रिलोकस्था त्रिविक्रमपदोद्भवा।।६६।। सुतारा तारिणी तारा दुर्गा सन्तारिणी परा। सुतारिणी तारयन्ती भूरितारेश्वरप्रभा।।६७।। गुह्यविद्या यज्ञविद्या महाविद्यासुशोभिता। अध्यात्मविद्या विघ्नेशी पद्मस्था परमेष्ठिनी।।६८।। आन्वीक्षिकी त्रयी वार्त्ता दण्डनीतिर्नयात्मिका। गौरी वागीश्वरी गोप्त्री गायत्री कमलोद्भवा।।६९।। विश्वम्भरा विश्वरूपा विश्वमाता वसुप्रदा। सिद्धिः स्वाहा स्वधा स्वस्ति सुधा सर्वार्थसाधिनी।।७०।। इच्छा सृष्टिर्द्युतिर्भूतिः कीर्तिः श्रद्धा दया मतिः। श्रुतिर्मेधा धृतिर्ह्रीः श्रीर्विद्या विबुधवन्दिता।।७१।। अनसूया घृणा नीतिर्निर्वृतिः काम–धूक्करा। प्रतिज्ञासन्ततिर्भूतिर्द्यौः प्रज्ञा विश्वमानिनी।।७२।। समृतिर्वाग्विश्वजननी पश्यन्ती मध्यमा समा। सन्ध्या मेधा प्रभा भीमा सर्वाकारा सरस्वती।।७३।। कांक्षा माया महामाया मोहिनी माधवप्रिया। सौम्याभोगा महाभोगा भोगिनी भोगदायिनी।।७४।। सुधौतकनकप्रख्या

सुवर्णकमलासना। हिरण्यगर्भा सुश्रोणी हारिणी रमणी रमा।।७५।। चन्द्रा हिरण्मयी ज्योत्सना रम्या शोभा शुभावहा। त्रैलोक्यमण्डना नारी नरेश्वरार्चिता।।७६।। त्रैलोक्यसुन्दरी रामा महाविभववाहिनी। पद्मस्था पद्मनिलया पद्ममालाविभूषिता।।७७।। पद्मयुग्मधरा कान्ता दिव्याभरणभूषिता। विचित्ररत्नमुकुटा विचित्राम्बरभूषणा।।७८।। विचित्रमाल्यगन्धाढ्या विचित्रायुधवाहना। महानारायणी देवी वैष्णवी वीरवन्दिता।।७९।। कालसङ्कर्षिणी घोरा तत्त्वसङ्कर्षिणी कला। जगत्सम्पूरणी विश्वा महाविभवभूषणा।।८०।। वारुणी वरदा व्याख्या घण्टाकर्णविराजिता। नृसिंही भैरवी ब्राह्मी भास्करी व्योमचारिणी।।८१।। ऐन्द्री कामधेनुः सृष्टिः कामयोनिर्महाप्रभा। दृष्टा काम्या विश्वशक्ति र्जगत्यात्मदर्शना।।८२।। गरुडारूढहृदया चान्द्री श्रीर्मधुरानना। महोग्ररूपा वाराही नारसिंही हतासुरा।।८३।। युगान्तहुतभुग्ज्वाला कराला पिङ्गला कला। त्रैलोक्यभूषणा भीमा श्यामा त्रैलोक्यमोहिनी।।८४।। महोत्कटा महारक्ता महाचण्डा महासना। शङ्खिनी लेखिनी स्वस्था लिखिता खेचरेश्वरी।।८५।। भद्रकाली चैव वीरा कौमारी भवमालिनी। कल्याणी कामधुग्ज्वालामुखी चोत्पलमालिका।।८६।। बालिका धनदा सूर्या हृदयोत्पलमालिका। अजिता वर्षिणी रीतिर्भरुण्डा गरुडासना।।८७।। वैश्वानरी महामाया महाकाली विभीषणा। महामन्दारविभवा शिवानन्दा रतिप्रिया।।८८।। उद्रीतिः पद्म माला च धमवेगा विभावनी। सत्क्रिया देवसेना च हिरण्यरजताश्रया।।८९।। सहसावर्तमाना च हस्तिनादप्रबोधिनी। हिरण्यपद्मवर्णा च हरिभद्रा सुदुर्द्धरा।।९०।। सूर्या हिरण्यप्रकटसदृशी हेममालिनी। पद्मानना नित्य पुष्टा देवमाताऽमृतोद्भवा।।९१।। महाधना च या शृङ्गी कार्दमी कम्बुकन्धरा। आदित्यवर्णा चन्द्राभा गन्धद्वारा दुरासदा।।९२।। वरार्चिता वरारोहा वरेण्या विष्णुवल्लभा। कल्याणी वरदा वामा वामेशी विन्ध्यवासिनी।।९३।। योगनिद्रा योगरता देवकी कामरूपिणी। कंसविद्राविणी दुर्गा कौमारी कौशिकी क्षमा।।९४।। कात्यायनी कालरात्रिर्निशितृप्ता सुदुर्जया। विरूपाक्षी विशालाक्षी भक्तानां परिरक्षिणी।।९५।। बहुरूपा स्वरूपा च विरूपा रूपवर्जिता। घण्टानिनादबहुला जीमूतध्वनिनिःस्वना।।९६।। महादेवेन्द्रमथिनी भ्रुकुटीकुटिलानना। सत्योपयाचिता चैका कौबेरी ब्रह्माचारिणी।।९७।। आर्या यशोदासुतदा धर्मकामार्थमोक्षदा। दारिद्र्यदुःखशमनी घोरदुर्गार्तिनाशिनी।।९८।। भक्तार्तिशमनी भव्या भवभर्गापहारिणी। क्षीराब्धितनया पद्म कमला धरणीधरा।।९९।।रुक्मिणी रोहिणी सीता सत्यभामा यशस्विनी। प्रज्ञाधाराऽमिता–बुद्धिर्वेदमाता यशोवती।।१००।। समाधिर्भावना मैत्री करुणा भक्तवत्सला। अंतर्वेदी दक्षिणा च ब्रह्मचर्यपरागतिः।।१०१।। दीक्षा वीक्षा परीक्षा च समीक्षा वीरत्वसला। अम्बिका सुरभिः सिद्धा सिद्धविद्या–धरार्चिता।।१०२।। सुदीप्ता लेलिहाना च कराला विश्वपूरका। विश्वसंहारिणी दीप्तिस्तापनी ताण्डवप्रिया।।१०३।। उद्भवा विरजा राज्ञी तापनी विन्दुमालिनी। क्षीरधारासुप्रभावा लोकमाता सुवर्चसा।।१०४।। हव्यगर्भा चाज्यगर्भा जुह्वतो यज्ञसम्भवा। आप्यायनी पावनी च दहनी दहनाश्रया।।१०५।। मातृका माधवी मुच्या मोक्षलक्ष्मीर्महर्द्धिदा। सर्वकामप्रदा भद्रा सुभद्रा सर्वमङ्गला।।१०६।। श्वेता सुशुक्लवसना शुक्लमाल्यानुलेपना। हंसा हीनकरी हंसी हृद्या हृत्यकमलालया।।१०७।। सितातपत्रा सुश्रोणी पद्मपत्रायते क्षणा। सावित्री सत्यसङ्कल्पा कामदा कामकामिनी।।१०८।। दर्शनीया

दृशा स्पृश्या सेव्या वराङ्गना। भोगप्रिया भोगवती भोगीन्द्रशयनासना।।१०६।। आर्द्रा पुष्करिणी पुण्या पावनी पापसूदनी। श्रीमती च शुभाकारा परमैश्वर्यभूतिदा।।११०।। अचिन्त्यानन्तविभवा भवभावविभावनी। निश्रेणिः सर्वदेहस्था सर्वभूतनमस्कृता।।१११।। बला बलाधिका देवी गौतमी गोकुलालया। तोषणी पूर्णचन्द्राभा एकानन्दा शताननना।।११२।। उद्याननगरद्वारहर्म्योपवनवासिनी। कूष्माण्डीदारुणा चण्डा किराती नन्दनालया।।११३।। कालायना कालगम्या भयदा भयनाशिनी। सौदामिनी मेघरवा दैत्यदानवमर्द्दिनी।।११४।। जगन्माता भयकरी भूतधात्री सुदुर्लभा। काश्यपी शुभदाना च वनमाला शुभा वरा।।११५।। धन्या धन्येश्वरी धन्या रत्नदा वसुवर्द्धिनी। गान्धर्वी रेवती गंगा शकुनी विमलाननना।।११६।। इडा शान्तिकरी चैव तामसी कमलालया। आज्यपा वज्रकौमारी सोमपा कुसुमाश्रया।।११७।। जगत्प्रिया च सरथा दुर्जया खगवाहना। मनोभवा कामचारा सिद्धचारणसेविता।।११८।। व्योमलक्ष्मीर्महालक्ष्मीस्तेजोलक्ष्मीः सुजाज्वला। रसलक्ष्मीर्जगद्योनिर्गन्धलक्ष्मीर्वनाश्रया।।११९।। श्रवणा श्रावणा नेत्रा रसनाप्राणचारिणी। विरिञ्चिमाता विभवा वरवारिजवाहना।।१२०।। वीर्या वीरेश्वरी वन्द्या विशोका वसुवर्द्धिनी। अनाहता कुण्डलिनी नलिनी वनवासिनी।।१२१।। गान्धारिणीन्द्रनमिता सुरेन्द्रनमिता सती। सर्वमङ्गलमाङ्गल्या सर्वकामसमृद्धिदा।।१२२।। सर्वानन्दा महानन्दा सत्कीर्तिः सिद्धसेविता। सिनीवाली कुहू राका अमा चानुमतिर्द्युतिः।।१२३।। अरुन्धती वसुमती भार्गवी वास्तु देवता। मायूरी वज्रवेताली वज्रहस्ता वराननना।।१२४।। अनघा धरणिर्धीरा धमनी मणिभूषणा। राजश्रीरूपसंहिता ब्रह्मश्रीर्ब्रह्मवन्दिता।।१२५।। जयश्रीर्जयदा ज्ञेया सर्गश्रीः स्वर्गतिः सताम्। सुपुष्पा पुष्पनिलया फलश्रीर्निष्फलप्रिया।।१२६।। धनुर्लक्ष्मीस्त्वमिलिता परक्रोधनिवारिणी। कद्रूर्द्धनायुः कपिला सुरसा सुरमोहिनी।।१२७।। महाश्वेता महानीला महामूर्तिर्विषापहा। सुप्रभा ज्वालिनी दीप्तिस्तृप्तिर्व्याप्तिः प्रभाकरी।।१२८।। तेजोवती पद्मबोधा मदलेखारुणावती। रत्ना रत्नावलीभूता शतधामा शतापहा।।१२९।। त्रिगुणा घोषिणी रक्ष्या नर्द्दिनी घोषवर्जिता। साध्याऽदितिर्दितिर्द्देवी मृगवाहा मृगाङ्गना।।१३०।। चित्रनीलोत्पलगता वृषरत्नाकराश्रया। हिरण्यरजतद्वन्द्वा शङ्खभद्रासनस्थिता।।१३१।। गोमूत्रगोमयक्षीरदधिसर्पिर्जलाश्रया। मरीचिश्चीरवसाना पूर्णा चन्द्रार्कविष्टरा।।१३२।। सुसूक्ष्मा निर्वृतिस्थूला निवृत्तारातिरेव च। मरीचिज्वालिनी धूम्रा हव्यवाहा हिरण्यदा।।१३३।। दायिनी कालिनी सिद्धिः शोषिणी सम्प्रबोधिनी। भास्वरा संहतिस्तीक्ष्णा प्रचण्डज्वलनोज्ज्वला।।१३४।। साङ्गा प्रचण्डा दीप्ता च वैद्युतिः सुमहाद्युतिः। कपिला नीररक्ता च सुषुम्ना विस्फुलिङ्गिनी।।१३५।। अर्चिष्मती रिपुहरा दीर्घा धूमावली जरा। सम्पूर्णमण्डला पूषा स्रंसिनी सुमनोहरा।।१३६।। जया पुष्टिकरी च्छाया मानसा हृदयोज्ज्वला। सुवर्णकारिणी श्रेष्ठा मृतसञ्जीवनी रणे।।१३७।। विशल्यकरणी शुभ्रा सन्धिनी परमौषधिः। ब्रह्मिष्ठा ब्रह्मसहिता ऐन्दवी रत्नसम्भवा।।१३८।। विद्युत्प्रभा बिन्दुमती त्रिस्वभावगुणाम्बिका। नित्योदिता नित्यदृष्टा नित्यकामकरीषिणी।।१३९।। पद्माङ्का वज्रचिह्ना च वक्रदण्डा विभासिनी। विदेहपूजिता कन्या माया विजयवाहिनी।।१४०।। मानिनी मङ्गला मान्या मानिनी मानदायिनी। विश्वेश्वरी गणवती मण्डला मण्डलेश्वरी।।१४१।। हरिप्रिया भौमसुता मनोज्ञा मतिदायिनी। प्रत्यंगिरा सोमगुप्ता मनोभिज्ञा वदन्मतिः।।१४२।।

यशोधरा रत्नमाला कृष्णा त्रैलोक्यबन्धिनी। अमृताधारिणी हर्षा विनता वल्लकी शची।।१४३।। संकल्पा भामिनी मिश्रा कादम्बर्यामृता प्रभा। आगता निर्गता वज्रा सुहिता सहिताऽक्षता।।१४४।। सर्वार्थसाधनकरी धातुर्द्धारणिकामला। करुणाधारसम्भूता कमलाक्षी शशिप्रिया।।१४५।। सौम्यरूपा महादीप्ता महाज्वाला विकासिनी। माला काञ्चनमाला च सद्वज्रा कनकप्रभा।।१४६।। प्रक्रियापरमा योक्त्री क्षोभिका च सुखोदया। विजृम्भणा च वज्राख्या शृङ्खला कमलेक्षणा।।१४७।। जयंकरी मधुमती हरिता शशिनी शिवा। मूलप्रकृतिरीशानी योगमाता मनोजवा।।१४८।। धर्मोदया भानुमती सर्वाभासा सुखावहा। धुरन्धरा च बाला च धर्मसेव्या तथागता।।१४९।। सुकुमारा सौम्यमुखी सौम्यसम्बोधनोत्तमा। सुमुखी सर्वतोभद्र गुह्य शक्तिर्गुहालया।।१५०।। हलायुधा च कावीरा सर्वशास्त्रसुधारिणी। व्योमशक्तिर्महादेहा व्योमगा मगुमन्मयी।।१५१।। गङ्गा वितस्ता यमुना चन्द्रभागा सरस्वती। तिलोत्तमोर्वशी रम्भा स्वामिनी सुरसुन्दरी।।१५२।। बाणप्रहरणा बाला बिम्बोष्ठी चारुहासिनी। ककुभिनी चारुपृष्ठा दृष्टादृष्टफलप्रदा।।१५३।। काम्यचरी च काम्या च कामाचारविहारिणी। हिमशैलेन्द्रसंकाशा गजेन्द्रवरवाहना।।१५४।। अशेषसुखसौभाग्यसम्पदां योनिरुत्तमा। सर्वोत्कृष्टा सर्वमयी सर्वा सर्वेश्वरप्रिया।।१५५।। सर्वाङ्गयोनिः साऽव्यक्ता सम्प्रधानेश्वरेश्वरी। विष्णुवक्षःस्थलगता किमतः परमुच्यते।।१५६।। परा निर्महिमा देवी हरिवक्षःस्थला श्रया। सा देवी पापहन्त्री च सान्निध्यं कुरुतान्मम।।१५७।। इति नाम्नां सहस्रं तु लक्ष्म्याः प्रोक्तं शुभावहम्। परावरेण भेदेन मुख्यगौणैन भागतः।।१५८।। यश्चैतत्कीर्तयेन्नित्यं शृणु याद्वपि पद्मज। शुचिः समाहितो भूत्वा भक्तिश्रद्धासमन्वितः।।१५९।। श्रीनिवासं समभ्यर्च्य पुष्पधूपाबुलेपनैः। भोगैश्च मधुपर्काद्यैर्यथाशक्ति जगद्गुरुम्।।१६०।। तत्पार्श्वस्थां श्रियं देवीं सम्पूज्य श्रीधर प्रियाम्। ततो नामसहस्रेण तोषयेत्परमेश्वरीम्।।१६१।।

नानारत्नावलीस्तोत्रमिदं यः सततं पठेत्। प्रसादाभिमुखी लक्ष्मीः सर्वं तस्मै प्रयच्छति।।१६२।। यस्या लक्ष्म्याश्च सम्भूताः शक्तयो विश्वगाः सदा। कारणत्वं न तिष्ठन्ति जगत्यस्मिश्चराचरे।।१६३।। तस्मीत्प्रीता जगन्माता श्रीर्यस्याच्युतवल्लभा। सुप्रीता शक्तयस्तस्य सिद्धिमिष्टां दिशन्ति हि।।१६४।। एक एव जगत्स्वामी शक्तिमानच्युतः प्रभुः। तदंशशक्तिमन्तोऽन्ये ब्रह्मेशानादयो यथा।।१६५।। तथैवका परा शक्तिश्श्रीस्तस्य करुणाश्रया। ज्ञानादिषाड्गुण्यमयी या प्रोक्ता प्रकृतिः परा।।१६६।। एकैकशक्तिश्श्रीस्तस्या द्वितीयात्मनि वर्त्तते। परा परेशी सर्वेशी सर्वाकारा सनातनी।।१६७।। अनन्तना–मधेया च शक्ति चक्रस्य नायिका। जगच्चराचरमिदं सर्वं व्याप्य व्यवस्थिता।।१६८।। तस्मादेकैव परमा श्रीर्ज्ञेया विश्वरूपिणी। सौम्या सौम्येन रूपेण संस्थिता नटजीववत्।।१६९।। योयो जगति पुंभावः स विष्णुरिति निश्चयः। याया तु नारीभावस्था तत्र लक्ष्मीर्व्यवस्थिता।।१७०।। प्रकृतेः पुरुषाच्चान्यस्तृतीयो नैव विद्यते। अथ किं बहुनोक्तेन नरनारीमयो हरिः।।१७१।। अनेकभेदभिन्नस्तु क्रियते परमेश्वरः। महाविभूतिं दयितां ये स्तुवन्त्यच्युतप्रियाम्।।१७२।। ते प्राप्तुवन्ति परमां लक्ष्मीं संशुद्धचेतसः। पद्मयोनिरिदं प्राप्य पठंस्तोत्रमिदं क्रमात्।।१७३।। दिव्यमष्टगुणैश्वर्यं तत्प्रसादाच्च लब्धवान्। सकामानाञ्च फलदामकामानाञ्च मोक्षदाम्।।१७४।। पुस्तकाख्यां भयत्रार्त्तीं सितवस्त्रां त्रिलोचनाम्। महापद्मनिषण्णां तां लक्ष्मीमजरतां नमः।।१७५।।

करयुगलगृहीतं पूर्णकुम्भं दधाना क्वचिदमलगतस्था शङ्खपद्माक्षपाणिः। क्वचिदपि दयिताङ्के चामरव्यग्रहस्ता क्वचिदपि सृणिपाशं बिभ्रती हेमकान्तिः।।१७६।।

जो इस नाना रत्नावली स्तोत्र का सदा पाठ करता है उसे लक्ष्मी प्रसन्न होकर सब कुछ देती हैं। संसार की समस्त शक्तियाँ जिस लक्ष्मी से उत्पन्न होती हैं, वे इस चराचर जगत् में कारण रूप से नहीं रहतीं। इस लिए जगन्माता विष्णुवल्लभा लक्ष्मी जिस पर प्रसन्न हो जाती हैं, उसे समस्त शक्तियाँ निश्चित रूप से इष्ट सिद्धि प्रदान करती हैं। एक ही शक्तिमान् विष्णुभगवान् जगत्स्वामी हैं।। उनके अंशभूत ब्रह्मा शिव आदि शक्तिमान् है। उसी प्रकार एक ही करुणाश्रया श्री शक्ति है, जो कि ज्ञान आदि षाड्गुण्यमयी और परा प्रकृति कही गयी है। एक ही श्री शक्ति है। दूसरी शक्तियाँ उसी में निहित हैं। वह परा, परेशी, सर्वेशी, सर्वकारा, सनातनी आदि अनन्त नामों वाली शक्ति–चक्र की नायिका है और इस चराचर जगत् में व्याप्त होकर व्यवस्थित है। इसलिये एक ही विश्वरूपिणी श्री को जानना चाहिए। नट जीव के समान सौम्या सौम्यरूप से संस्थित हैं। संसार में जो–जो पुम्भाव है, वह सब विष्णु स्वरूप है। जो–जो नारी भाव हैं उन सब में लक्ष्मी व्यवस्थित हैं। प्रकृति तथा पुरुष से भिन्न तीसरा कुछ भी नहीं है। अधिक कहने से क्या लाभ ? हरि नरनारीमय हैं। परमेश्वर अनेक भेदों से भिन्न किया जाता है। जो विष्णुप्रिया पत्नी महाविभूति लक्ष्मी जी की स्तुति करते हैं, वे शुद्ध चित्त वाले परम लक्ष्मी को प्राप्त होते हैं। ब्रह्मा जी ने इस स्तोत्र को पाकर इसका क्रम से पाठ करते हुए उनके प्रसाद से अष्टगुणों से युक्त दिव्य ऐश्वर्य को प्राप्त किया। सकाम स्तुति करने वालों को फल देने वाली तथा निष्काम स्तुति करने वालों को मुक्ति देने वाली, पुस्तकाख्या, भयत्रात्री, सितवस्त्रा, त्रिलोचना, महापद्मस्थिता, अजरा लक्ष्मी को मेरा नमस्कार हो। करयुगलगृहीत पूर्ण कुम्भ को धारण किये हुये, क्वचित् अमलगतस्था, शङ्खपद्माक्षपाणि, क्वचित् पति के अङ्क पर चामर डुलाती हुई क्वचित् सृणिपाश धारण किये हुये स्वर्ण कान्तिमयी लक्ष्मी जी सुशोभित हैं।।१६२–१७६।।

इति ब्रह्मपुराणे काश्मीरवर्णने हिरण्यगर्भहृदये सर्वकामप्रदायकं
पुरुषोत्तमप्रोक्तं लक्ष्मीसहस्रनामस्तोत्रं समाप्तम्।

लक्ष्मीहृदयस्तोत्र

विनियोग : आद्यादिश्रीमहालक्ष्मीहृदयमालामन्त्रस्य भार्गव ऋषिः आद्यादि–श्रीमहालक्ष्मीर्देवता अनुष्टुबादिनानाछन्दांसि श्रीं बीजं ह्रीं शक्तिः ऐं कीलकम् आद्यादिमहालक्ष्मीप्रसादसिद्ध्यर्थं पाठे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास : ॐ भार्गवऋषये नमः शिरसि १। ॐ अनुष्टुबादिनानाच्छन्दोभ्यो नमो मुखे २। ॐ आद्यादिश्रीमहालक्ष्म्यै देवतायै नमो हृदये ३। ॐ श्रीं बीजाय नमो गुह्ये ४। ॐ ह्रीं शक्तये नमः पादयोः ५। ॐ ऐं कीलकाय नमो नाभौ ६। ॐ विनियोगाय नमः सर्वाङ्गेषु ७। इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास : ॐ श्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः १। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः २। ॐ ऐं मध्यमाभ्यां नमः ३। ॐ श्रीं अनामिकाभ्यां नमः ४। ॐ ह्रीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। ॐ ऐं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६। इति करन्यासः।

हृदयादिषडङ्गन्यास : ॐ श्रीं हृदयाय नमः १। ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा २। ॐ ऐं शिखायै वषट् ३। ॐ श्रीं कवचाय हुम् ४। ॐ ह्रीं नेत्रत्रयाय वौषट् ५। ॐ ऐं अस्त्राय फट् ६। ॐ श्रीं ह्रीं ऐं इति दिग्बन्धः। इति हृदयादिन्यासः।

अथ ध्यानम् :

हस्तद्वयेन कमले धारयन्तीं स्वलीलया। हारनूपुरसंयुक्तां लक्ष्मीं देवीं विचिन्तये।।१।।

इति ध्यात्वा सम्पूज्य ॐ शङ्खचक्रगदाहस्ते शुभ्रवर्णे सुवासिनि। मम देहि वरं लक्ष्मि सर्वसिद्धिप्रदायिनि।।२।। इति सम्प्रार्थ्य। ॐ श्रीं ह्रीं ऐं महालक्ष्म्यै कमलधारिण्यै सिंहवाहिन्यै स्वाहा। इति मन्त्रं जपित्वा पुनः पूर्ववद्धृदयादिषडङ्गन्यासं कृत्वा स्तोत्रं पठेत्।

इस प्रकार ध्यान और पूजा करके "ॐ शंखचक्रगदाहस्ते शुभ्रवर्णे सुवासिनि मम देहि वरं लक्ष्मि सर्वसिद्धिप्रदायिनि।" इससे प्रार्थना करके: "ॐ ह्रीं ऐं महालक्ष्म्यै कमलधारिण्यै सिंहवाहिन्यै स्वाहा" इस मन्त्र को जप कर पुनः पूर्ववत् हृदयादि षडङ्गन्यास करके स्तोत्र का पाठ करना चाहिये। यथा :

वन्दे लक्ष्मीं परशिवमयीं शुद्धजाम्बूनदाभां तेजोरूपां कनकवसनां सर्वभूषोज्ज्वलाङ्गीम्। बीजापूरं कनककलशं हेमपद्मं दधानामाद्यां शक्तिं सकलजननीं विष्णुवामाङ्कसंस्थाम्।।१।। श्रीमत्सौभाग्यजननीं स्तौमि लक्ष्मीं सनातनीम्। सर्वकामफलावाप्तिसाधनैकसुखादहाम्।।२।। स्मरामि नित्यं देवेशि त्वया प्रेरितमानसाः। त्वदाज्ञां शिरसा धृत्वा भजामि परमेश्वरीम्।।३।। समस्तसम्पत्सुखदां महाश्रियं समस्तसौभाग्यकरीं महाश्रियम्। समस्तकल्याणकरीं महाश्रियं भजाम्यहं ज्ञानकरीं महाश्रियम्।।४।। विज्ञानसम्पत्सुखदां सनातनीं विचित्रवाग्भूतिकरीं मनोहराम्। अनन्तसामोदसुखप्रदायिनीं नमाम्यहं भूतिकरीं हरिप्रियाम्।।५।। समस्त भूतान्तरसंस्थिता त्वं समस्त भोक्त्रीश्वरि विश्वरूपे। तन्नास्ति यत्त्वद्व्यतिरिक्तवस्तु त्वत्पादपद्मं प्रणमाम्यहं श्रीः।।६।। दारिद्र्यदुःखौघतमोपहंत्री त्वत्पादपद्मं मयि सन्निधत्स्व। दीनार्तिविच्छेदनहेतुभूतैः कृपाकटाक्षैरभिषिञ्च मां श्रीः।।७।। अम्ब प्रसीद करुणा-सुधयार्द्रदृष्ट्या मां त्वत्कृपापात्रविणगेहमिमंकुरुष्व। आलोकय प्रणतहृद्गतशोकहंत्री त्वत्पादपद्मयुगलं प्रणमाम्यहं श्रीः।।८।। शान्त्यै नमोस्तु शरणागतरक्षणायै कान्त्यै नमोस्तु कमनीयगुणाश्रयायै। क्षान्त्यै नमोस्तु दुरितक्षयकारणायै धात्र्यै नमोऽस्तु धनधान्य-समृद्धिदायै।।९।। शक्त्यै नमोऽस्तु शशिशेखरसंस्तुतायै रत्यै नमोऽस्तु रजनीकरसोदरायै। भक्त्यै नमोऽस्तु भवसागरतारकायै मत्यै नमोऽस्तु मधुसूदनवल्लभायै।।१०।। लक्ष्म्यै नमोऽस्तु शुभलक्षणलक्षितायै सिद्ध्यै नमोऽस्तु शिवसिद्धसुपूजितायै। धृत्यै नमोऽस्त्वमितदुर्गतिभञ्जनायै गत्यै नमोऽस्तु वरसद्गतिदायिकायै।।११।। देव्यै नमोऽस्तु दिवि देवगणार्चितायै भूत्यै नमोऽस्तु भवनार्तिविनाशनायै। दात्र्यै नमोऽस्तु धरणीधरवल्लभायै पुष्ट्यै नमोःस्तु पुरुषोत्तमवल्लभायै।।१२।। सुतीव्रदारिद्र्यविदुःखहन्त्र्यै नमोऽस्तु ते सर्वभयापहन्त्र्यै। श्रीविष्णुवक्षःस्थलसंस्थितायै नमोनमस्सर्वविभूतिदायै।।१३।। जयतुजयतु लक्ष्मीर्लक्षणालंकृताङ्गी जयतुजयतु पद्मा पद्मसद्माभिवन्द्या। जयतुजयतु विद्या विष्णु वामाङ्कसंस्था ज़यतुजयतु सम्यक् सर्वसम्पत्करी श्रीः।।१४।। जयतुजयतु देवी देवसङ्घाभिपूज्या जयतुजयतु भद्रा भार्गवी भाग्यरूपा। जयतुजयतु नित्या निर्मलज्ञानवेद्या जयतुजयतु सत्या सर्वभूतान्तरस्था।।१५।। जयतुजयतु रम्या रत्नगर्भान्तरस्था जयतुजयतु शुद्धा शुद्धजाम्बूनदाभा जयतुजयतु कान्ता कान्तिमद्भासिताङ्गी जयतुजयतु शान्ता शीघ्रमागच्छ सौम्ये।।१६।। यस्याः कलाद्याः कमलोद्भवाद्या रुद्राश्च शक्रप्रमुखाश्च देवाः।

जीवन्ति सर्वा अपि शक्तयस्ताः प्रभुत्वमाप्ताः परमायुषस्ते।।१७।। लिलेख निटिले विधिर्मम लिपिं विसृज्यान्तरं त्वया विलिखितव्यमेतदिति तत्फलप्राप्तये। तदन्तरफले स्फुटं कमलवासिनी श्रीरमां समर्पय समुद्रिकां सकलभाग्य संसूचिकाम्।।१८।। कलया ते यथा देवि जीवन्ति सचराचराः। तथा सम्पत्करे लक्ष्मि सर्वदा सम्प्रसीद मे।।१९।। यथा विष्णुर्ध्रुवे नित्यं स्वकलां संन्यवेशयत्। तथैव स्वकलां लक्ष्मि मयि सम्यक् समर्पय।।२०।। सर्वसौख्यप्रदे देवि भक्तानामभयप्रदे। अचलां कुरु यत्नेन कलां मयि निवेशिताम्।।२१।। मुदास्तां मद्भाले परमपदलक्ष्मीः स्फुटकला सदा वैकुण्ठश्रीर्निवसतु कला मे नयनयोः। वसेत्सत्ये लोके मम् वचसि लक्ष्मीवरकला श्रियः श्वेतद्वीपे निवसतु कला मे स्वकरयोः।।२२।। तावन्नित्यं ममाङ्गेषु क्षीराब्धौ श्रीकला वसेत्। सूर्यचन्द्रमसौ यावद्यावल्लक्ष्मीपतिः श्रियाः।।२३।। सर्वमंगलसंम्पूर्णा सर्वैश्वर्यसमन्विता। आद्यादिश्री महालक्ष्मि त्वत्कला मयि तिष्ठतु।।२४।। अज्ञानतिमिरं हन्तुं शुद्धज्ञानप्रकाशिका। सर्वैश्वर्यप्रदा मेस्तु त्वत्कला मयि संस्थिता।।२५।। अलक्ष्मीं हरतु क्षिप्रं तमः सूर्यप्रभा यथा। वितनोतु मम श्रेयस्त्वत्कला मयि संस्थिता।।२६।। ऐश्वर्यमंगलोत्पत्तिस्त्वत्कलायान्निधीयते। मयि तस्मात्कृतार्थोऽस्मि पात्रमस्मि स्थितेस्तव।।२७।। भवदावेशभाग्यार्हो भाग्यवानस्मि भार्गवि। त्वत्प्रसादात्पवित्रोऽहं लोकमातर्नमोऽस्तु ते।।२८।। पुनासि मां त्वं कलयैव यस्मादतः समागच्छ ममाग्रतस्त्वम्। परम्पदं श्रीर्भव सुप्रसन्ना मय्यच्युते न प्रविशादिलक्ष्मि।।२९।। श्रीवैकुण्ठस्थिते लक्ष्मि समागच्छ ममाग्रतः। नारायणेन सह मां कृपादृष्ट्याऽवलोकय।।३०।। सत्यलोकस्थिते लक्ष्मि त्वं ममागच्छ सन्निधिम्। वासुदेवेन सहिता प्रसीद वरदा भव।।३१।। श्वेतद्वीपस्थिते लक्ष्मि शीघ्रमागच्छ सुव्रते। विष्णुना सहिते देवि जगन्मातः प्रसीद मे।।३२।। क्षीराम्बुधिस्थिते लक्ष्मि समागच्छ समाधवे। त्वकृपा–दृष्टिसुधया सततं मां विलोकय।।३३।। रत्नगर्भस्थिते लक्ष्मि परिपूर्णे हिरण्मये। समागच्छ समागच्छ स्थित्वाऽऽशु पुरतो मम।।३४।। स्थिरा भव महालक्ष्मि निश्चला भव निर्मले। प्रसन्ने कमले देवि प्रसन्नहृदया भव।।३५।। श्रीधरे श्रीमहाभूते त्वदन्तःस्थं महानिधिम्। शीघ्रमुद्धृत्य परतः प्रदर्शय समर्पय।।३६।। वसुन्धरे श्रीवसुधे वसुदोग्धि कृपामये। त्वत्कुक्षिगतसर्वस्वं शीघ्रं मे संप्रदर्शय।।३७।। विष्णुप्रिये रत्नगर्भे समस्तफलदे शिवे। त्वद्गर्भगतहेमादीन् सम्प्रदर्शय दर्शय।।३८।। रसातलगते लक्ष्मि शीघ्रमागच्छ मे पुरः। न जाने परमं रूपं मातर्मे संप्रदर्शय।।३९।। आविर्भव मनोवेगाच्छीघ्रमागच्छ मे पुरः। मा वत्स भैरिहेत्युक्त्वा कामं गौरिव रक्ष माम्।।४०।। देवि शीघ्रं समागच्छ धरणीगर्भसंस्थिते। मातस्त्वद्भृत्यभृत्योऽहं मृगये त्वा कुतूहलात्।।४१।। उत्तिष्ठ जागृहि त्वं मे समुत्तिष्ठसुजागृहि। अक्षयान्हेमकलशान् सुवर्णेन सुपूरितान्।।४२।। निक्षेपान्मे समाकृष्य समुद्धृत्य ममाग्रतः। समुन्नताननना भूत्वा समाधेहि धरान्तरात्।।४३।। मत्सन्निधिं समागच्छ मदाहितकृपारसात्। प्रसीद श्रेयसान्दोग्धि लक्ष्मि मे नयनाग्रतः।।४४।। अत्रोपविश लक्ष्मि त्वं स्थिरा भव हिरण्मये। सुस्थिरा भव संप्रीत्या प्रसीद वरदा भव।।४५।। आनीय त्वं तथा देवि निधीन्मे सम्प्रदर्शय। अद्य क्षणेन सहसा दत्त्वा संरक्ष मां सदा।।४६।। मयि तिष्ठ तथा नित्यं यथेन्द्रादिषु तिष्ठसि। अभयं कुरु मे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते।।४७।। समागच्छ महालक्ष्मि शुद्धजाम्बूनदप्रभे।

प्रसीद पुरतः स्थित्वा प्रणतं मां विलोकय।।४८।। भुवङ्गता भासि लक्ष्मि यत्रयत्र हिरण्मयी। तत्रतत्र स्थिता त्वं मे तव रूपं प्रदर्शय।।४९।। क्रीडते बहुधा भूमौ परिपूर्णहिरण्मये। मम मूर्द्धनि ते हस्तमविलम्बितमर्पय।।५०।। फलद्भाग्योदये लक्ष्मि समस्तपुरवासिनि। प्रसीद मे महालक्ष्मि परिपूर्णमनोरथे।।५१।। अयोध्यादिषु सर्वेषु नगरेषु समास्थिते। वैभवै-र्विविधैर्युक्ता समागच्छ बलान्विते।।५२।। समागच्छ समागच्छ ममाग्रे भव सुस्थिरा। करुणारसनिष्यन्दनेत्रद्वयविलासिनी।।५३।। सन्निधत्स्व महालक्ष्मि त्वत्पाणिं मम मस्तके। करुणा सुधया मां त्वमभिषिञ्च स्थिरीकुरु।।५४।। सर्वराजगृहे लक्ष्मि समागच्छ मुदान्विते। स्थित्वाशु पुरतो मेऽद्य प्रसादेनाभयं कुरु।।५५।। सादरं मस्तके हस्तं मम त्वं कृपयार्पय। सर्वराजगृहे लक्ष्मि त्वत्काला मयि तिष्ठतु।।५६।। आद्यादिश्रीमहालक्ष्मि विष्णुवामांकसंस्थिते। प्रत्यक्षं कुरु मे रूपं रक्ष मां शरणागतम्।।५७।। प्रसीद मे महालक्ष्मि सुप्रसीद महाशिवे। अचला भव संप्रीत्या सुस्थिरा भव मद्गृहे।।५८।। यावत्तिष्ठन्ति देवाश्च यावत्त्वन्नाम तिष्ठति। यावद्विष्णुश्च यावत्त्वं तावत्कुरु कृपां मयि।।५९।। चान्द्री कला यथा शुक्ले वर्द्धते सा दिनेदिने। तथा दया ते मय्येव वर्द्धतामभिवर्द्धताम्।।६०।। यथा वैकुण्ठनगरे यथा वै क्षीरसागरे। तथा मद्भवने तिष्ठ स्थिरा श्रीविष्णुना सह।।६१।। योगिनां हृदये नित्यं यथा तिष्ठसि विष्णुना। तथा मद्भवने तिष्ठ स्थिरा श्रीविष्णुना सह।।६२।। नारायणस्य हृदये भवती यथास्ते नारायणोपि तव हृत्कमले यथाऽऽस्ते। नारायणस्त्वमपि नित्यमुभौ तथैव तौ तिष्ठतां हृदि ममापि दयावति श्रीः।।६३।। विज्ञानवृद्धिं हृदये कुरु श्रीः सौभाग्यवृद्धिं कुरु मे गृहे श्रीः दयासुवृद्धिं कुरुतां मयि श्रीः सुवर्णवृद्धिं कुरु मे गृहे श्रीः।।६४।। न मां त्यजेथाः श्रितकल्पवल्लि सद्भक्तचिन्तामणिकामधेनो। विश्वस्य मातर्भव सुप्रसन्ना गृहे कलत्रेषु च पुत्रवर्गे।।६५।। आद्यादिमाये त्वमजाण्डबीजं त्वमेव साकारनिराकृतिस्त्वम्। त्वया धृताश्चाब्जभवाण्ड सङ्घाश्चित्रं चरितं तव देवि विष्णोः।।६६।। ब्रह्मरुद्रादयो देवा वेदाश्चापि न शक्नुयुः। महिमानं तव स्तोतुं मन्दोऽहं शक्नुयां कथम्।।६७।। अम्ब त्वद्वत्सवाक्यानि सूक्तासूक्तानि यानि च। तानि स्वीकुरु सर्वज्ञे दयालुत्वेन सादरम्।।६८।। भवतीं शरणं गत्वा कृतार्थाः स्युः पुरातनाः। इति सञ्चिन्त्य मनसा त्वामहं शरणं व्रजे।।६९।। अनन्ता नित्यसुखिनस्त्वद्भक्तास्त्वत्परायणाः। इति वेदप्रमाणाद्धि देवि त्वां शरणं व्रजे।।७०।। तव प्रतिज्ञा मद्भक्ता न नश्यन्तीत्यपि क्वचित्। इति सञ्चिन्त्य सञ्चिन्त्य प्राणान्सन्धारयाम्यहम्।।७१।। त्वदधीनस्त्वहं मातस्त्वत्कृपा मयि विद्यते। यावत्सम्पूर्णकामः स्यात्तावद्देहि दयानिधे।।७२।। क्षणमात्रं न शक्नोमि जीवितुं त्वत्कृपां विना। न जीवन्तीह जलजा जलं त्यक्त्वा जलग्रहाः।।७३।। यथा हि पुत्रवात्सल्याज्जननी प्रस्नुतस्तनी। वत्सं त्वरितमागत्य सम्प्रीणयति वत्सला।।७४।। यदि स्यां तव पुत्रोऽहं माता त्वं यदि मामकी। दयापयोधरस्तन्यसुधाभिरभिषिञ्च माम्।।७५।। मृग्यो न गुणलेशोऽपि मयि दोषैकमन्दिरे। पांसूनां वृष्टिबिन्दूनां दोषाणाञ्च न मे मितिः।।७६।। पापिनामहमेवाग्रयो दयालूनां त्वमग्रणीः। दयनीयो मदन्योऽस्ति तव कोऽत्र जगत्त्रये।।७७।। विधिनाहं न सृष्टश्चेन्न स्यात्तव दयालुता। आमयो वा न सृष्टश्चेदौषधस्य वृथोदयः।।७८।। कृपा मदग्रजा किं ते अहं किं वा तदग्रजः। विचार्य देहि मे वित्तं तव देवि दयानिधे।।७९।। माता पिता त्वं गुरुसद्गतिः

श्रीस्त्वमेव सञ्जीवनहेतुभूता। अन्यन्न मन्ये जगदेकनाथे त्वमेव सर्वं मम देवि सत्ये।।८०।। आद्यादिलक्ष्मीर्भव सुप्रसन्ना विशुद्धविज्ञानसुखैकदोग्ध्री। अज्ञानहन्त्री त्रिगुणातिरिक्ता प्रज्ञाननेत्री भव सुप्रसन्ना।।८१।। अशेषवाग्जाड्यमलापहन्त्री नवंनवं स्पष्टसुवाक्प्रदायिनी। ममेह जिह्वाग्रसुरङ्गनर्त्तकी भव प्रसन्ना वदने च मे श्रीः।।८२।। समस्तसम्पत्सुविराजमाना समस्ततेजश्चयभासमाना। विष्णुप्रिये त्वं भव दीप्यमाना वाग्देवता मे नयने प्रसन्ना।।८३।। सर्वप्रदर्शे सकलार्थदे त्वं प्रभासुलावण्यदयाप्रदोग्ध्री। सुवर्णदे त्वं सुमुखी भव श्रीर्हिरण्मयी मे नयने प्रसन्ना।।८४।। सर्वार्थदा सर्वजगत्प्रसूतिः सर्वेश्वरी सर्वभयापहन्त्री। सर्वोन्नता त्वं सुमुखी भव श्रीर्हिरण्मयी मे नयने प्रसन्ना।।८५।। समस्तविघ्नौघविनाशकारिणी समस्तभक्तोद्धरणे विचक्षणा। अनन्तसौभाग्यसुखप्रदायिनी हिरण्मयी मे नयने प्रसन्ना।।८६।। देवि प्रसीद दयनीयतमाय मह्यं देवाधिनाथभवदेवगणा–धिवन्द्ये। मातस्तथैव भव सन्निहिता दृशोर्मे पत्या समं मम मुखे भव सुप्रसन्ना।।८७।। मा वत्स मैरभयदानकरोऽर्पितस्ते मौलौ ममेति मम दीनदयानुकम्पे। मातः समर्पय मुदा करुणा कटाक्षं माङ्गल्यबीजमिह नः सृजः जन्म मातः।।८८।। कटाक्ष इह कामधुक्तव मनस्तु चिन्तामणिः करः सुरतरुः सदा नवनिधि स्त्वमेवेन्दिरे। भवे तव दयारसो मम रसायनं चान्वहं मुखं तव कलानिधिर्विविधवाञ्छितार्थप्रदम्।।८९।। यथा रसस्पर्शनतोऽयसोपि सुवर्णता स्यात्कमले तथा ते। कटाक्षसंस्पर्शनतो जनानाम मंगलानामपि मंगलं त्वम्।।९०।। देहीति नास्तीति वचः प्रवेशाद्भीतो रमे त्वां शरणं प्रपद्ये। अतः सदाऽस्मिन्नभयप्रदा त्वं सहैव पत्या मयि सन्निधेहि।।९१।। कल्पद्रुमेण मणिना सहिता सुरम्या श्रीस्ते कलामहि रसेन रसायनेन। आस्तां यतो मम शिरः करदृष्टिपादस्पृष्टाः सुवर्णवपुषः स्थिरजङ्गमाः स्युः।।९२।। आद्यादिविष्णोः स्थिरधर्म्मपत्नी त्वमेव पत्या मयि सन्निधेहि। आद्यादिलक्ष्मि त्वदनुग्रहेण पदेपदे मे निधिदर्शनम् स्यात्।।९३।। आद्यादिलक्ष्मी हृदयं पठेद्यः स राज्यलक्ष्मीमचलां तनोति। महादरिद्रोऽपि भवेद्धनाढ्यस्तदन्वये श्रीः स्थिरतां प्रयाति।।९४।। अस्य स्मरणमात्रेण तुष्टा स्याद्विष्णुवल्लभा। तस्याभीष्टं ददात्याशु तं पालयति पुत्रवत्।।९५।। इदं रहस्यं हृदयं सर्वकामफलप्रदम्। जपः पञ्चसहस्रं तु पुरश्चरणमुच्यते।।९६।। त्रिकालमेककालं वा नरो भक्तिसमन्वितः। यः पठेच्छृणुयाद्वापि स याति परमां श्रियम्।।९७।। महालक्ष्मीं समुद्दिश्य निशि भार्गववासरे। इदं श्रीहृदयम् जप्त्वा पञ्चवारं धनी भवेत्।।९८।। अनेन हृदयेनान्नं गर्भिण्या अभिमन्त्रितम्। ददाति तत्कुले पुत्रो जायते श्रीपतिः स्वयम्।।९९।। नरेण वाऽथवा नार्य्या लक्ष्मीहृदयमन्त्रिते। जले पीते च तद्वंशे मन्दभाग्यो न जायते।।१००।। य आश्विने मासि च शुक्लपक्ष रमोत्सवे सन्निहिते सुभक्त्या। पठेत्तथैकोत्तरवारवृद्ध्या लभेत्स सौवर्णमयीं सुवृष्टिम्।।१०१।। य एकभक्तोऽन्वहमेकवर्षं विशुद्धधीः सप्ततिवारजापी स मन्दभाग्योपि रमाकटाक्षाद्भवेत्सहस्राक्षशताधिकश्रीः।।१०२।। श्रीशांघ्रिभक्तिं हरिदासदास्यं प्रसन्नमन्त्रार्थदृढैकनिष्ठाम्। गुरोः स्मृतिं निर्मलबोधबुद्धिं प्रदेहि मातः परमं पदं श्रियम्।।१०३।। पृथ्वीपतित्वं पुरुषोत्तमत्वं विभूतिवासं विविधा–र्थसिद्धिम्। सम्पूर्णकीर्तिं बहुवर्षभोगं प्रदेहि मे लक्ष्मि पुनः पुनस्त्वम्।।१०४।। वादार्थसिद्धिं जनवश्यताञ्च वयःस्थिरत्वं ललनासुभोगम्। पौत्रादिलब्धिं सकलार्थसिद्धिं प्रदेहि मे भार्गवि

जन्मजन्मनि।।१०५।। अथ शिरोबीजम्। ॐ यं हं कं लं पं श्रीम्।।१०६।। ध्यायेल्लक्ष्मीं प्रहसितमुखीं कोटिबालार्कभासं विद्युद्वर्णाम्बरवरधरां भूषणाढ्यां सुशोभाम्। बीजापूरं सरसिजयुगं बिभ्रतीं स्वर्णपात्रं भर्त्रा युक्तां मुहुरभयदा मह्यमप्यच्युतश्री।।१०७।। मह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्। सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्मयि स्थिरा।।१०८।।

इति श्रीअथर्वणरहस्ये लक्ष्मीहृदयस्तोत्रं सम्पूर्णम्।

लक्ष्मीसूक्त

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो ममावह।।१।। ताम्म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्।।२।। अश्वपूर्णां रथमध्यां हस्तिनादप्रमोदिनीम्। श्रियन्देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवीर्जुषताम्।।३।। कांसोस्मि तां हिरण्यप्राकरामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्। पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम्।।४।। चान्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्। तां पद्मनेमिं शरणमहं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणोमि।।५।। आदित्यवर्णे तपसोधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः। तस्य फलानि तपसानुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः।।६।। उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह। प्रादुर्भूतोसुराष्ट्रेऽस्मिन्कीर्ति मृद्धिं ददातु मे।।७।। क्षुत्पिपासामला ज्येष्ठा अलक्ष्मीर्नाशयाम्यहम्। अभूतिमसमृद्धिं च सर्वान्निर्गुद मे गृहात्।।८।। गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टाङ्करोषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्।।९।। मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि। पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः।।१०।। कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भ्रमकर्दम। श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्।।११।। आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीतं वस मे गृहे। निच देवोम्मातरं श्रियं वासय मे कुले।।१२।। आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्। सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो ममावह।।१३।। आर्द्रां यः करणीं यष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो ममावह।।१४।। ताम्म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योश्वान्विन्देयं पुरुषानहम्।।१५।। यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्। श्रियः पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत्।।१६।।

इति श्रीसूक्तम्।

इति श्रीमन्त्रमहार्णवे द्वितीयखण्डे लक्ष्मीतन्त्रे त्रयोदशस्तरङ्गः।।१३।।